उदबोधन 2020

उद्बोधन –2020 **अनुक्रमणिका**

क्र0 विषय पृष्ठ संख्या

1. **पू0 गुरूजी की आरती**

2. **श्री सद्गुरू स्तुति**

3. **पू0 गुरूजी के प्रवचन** –

- ***प्रतिनिधि होकर कार्य करिये***
- **ज्योति दर्शन**

4. **सद्गुरू–वाणी** –

- श्री **प्रकाश** भइया जी द्वारा प0 पू0 गुरू जी के आडियो कैसेटस द्वारा तैयार किया गया
- श्री योगेश शर्मा जी भइया द्वारा प्रदत्त पू0 गुरूजी के कुछ प्रवचन के अंश

5. शिष्यानुभव, संस्मरण, भजन, पत्र, एवं फोटो आदि

6. न्यास का वार्षिक लेखा –जोखा

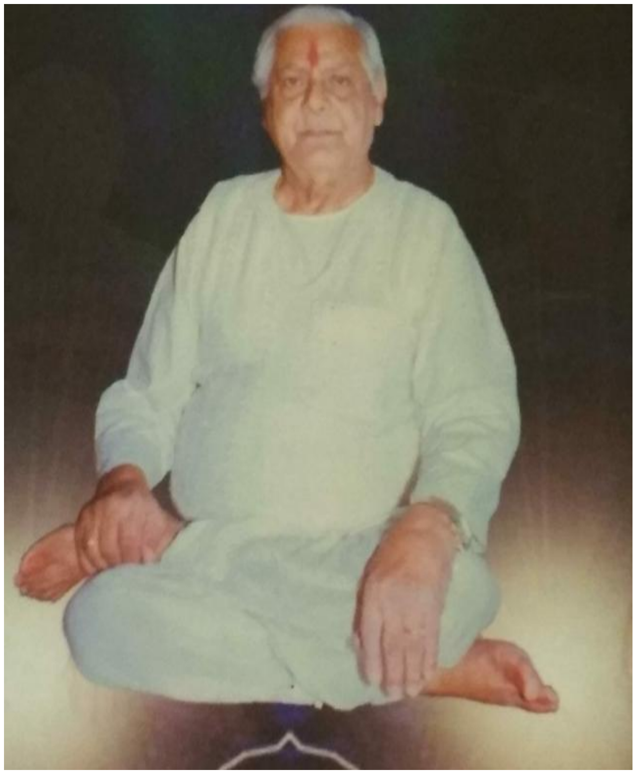

परम पू0 गुरुजी की आरती

ओम् जय जय जय गुरुजी ,

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।0।।

अष्टसिद्धि तव दासी, नवनिधि के स्वामी।

जन दुःख हरण–परायण, सब के सुखकामी।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।1।।

जन्मसिद्ध तुम योगी, नित परहित कर्त्ता।

साधक जन, पथदर्शक, शरणागत त्राता।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।2।।

शुद्ध, बुद्ध, तुम मुक्त भी, निश्चल अविनाशी।

सत्, चित, सुख, घन, ईश्वर, भक्त हृदयवासी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।3।।

गुरुजी हम पुत्रों की, तुम वत्सल जननी।

तव गुण वर्णन करते, मौन बने वाणी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।4।।

एक यही वर मॉ्गें, हम तव चरणों में।

अविचल भक्ति तुम्हारी, सदा रहे मन में।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।5।।

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।

सद्गुरू स्तुति

भव–भय–भंजन, पुरूष निरंजन, रतिपति–गंजनकारी।

यतिजन–रंजन, मनोमद–खंडन, जय भवबंधन–हारी।।

जय जन–पालक, सुरदल–नायक, जय जय विश्व–विधाता।

चिरशुभ–साधक, मतिमल–पावक, जय चित्तसंशय–त्राता।।

सुर नर–वंदन, विजर, विवंधन, चित–मन–नंदन–कारी।

रिपुचय 'मंथन, जय भतारण, स्थल–जल–भूधर–धारी।।

शम–दम–मंडन, अभय–निकेतन, जय जय मंगलदाता।

जय सुख सागर, नटवर, नागर, जय शरणागत पाता।।

भ्रमतर–भास्कर, जय परमेश्वर, सुखकर–सुन्दर–भाषी।

अचल सनातन, जय भपावन, जय विजयी अविनाशी।।

भक्त–विमोहन, वरतनु–धारण, जय हरिकीर्तन–भोला।

गदगद–भाषण, चित–मन–तोषण, ढलढल– नर्तनलीला।।

मतिगति–वर्धन, कलिबल–मर्दन, विषय–विराग प्रसारी।

जड़–चित्त–चेतक, भवजल–भेलक, जय नर मानस–चारी।।

जय पुरूषोत्तम, अनुपम संयम, जय जय अन्तरयामी।

खरतर–साधन, नर दुःख वारण, जय सदगुरू नमामि।।

नमो नमो प्रभु, वाक्य–मनातोत मनोवचनैकाधार।

ज्योर्ति ज्योति, उजल ह्रदिकंदर तुमि तम भंजनहार।।

।। जय गुरूजी ।।

सद्गुरू प्रवचन

‘ ईश्वर हरदम हमारे साथ रहता है,

जब महान विपदाओं में हम खुद को अकेले पाते हैं,

तब ईश्वर हम में होता है ‘

प्रतिनिधि होकर कार्य करिये

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगवान हैं, सत् पुरूष हैं, सद्गुरू हैं, लेकिन जब तक इनका तुमको दर्शन नहीं होता, जब तक वो प्रसन्न होकर तुमको कुछ न दें, वरदान न दे दें, जब तक तुम्हें आशीष न दे दें तब तक पूजा–वूजा करना सब ठीक ह । मैं यह नहीं कहता कि ये बराबर नहीं है, बराबर है लेकिन, जिस प्रकार से बच्चे अपने माता–पिता से हठ करते हैं कि यहीं वस्तु हम लेगें और माता–पिता उसको लाकर दे ही देते हैं । उसी प्रकार भगवान से, सत् पुरूष से हठ करके आप ले सकते हैं, और वो मिलता है । मैं उस पाने के लिये बहुत उपाय बताता हूँ और आज जो लोग कर रहें हैं, वो आनंद में हैं । जिन्होंने किया है वो आनंद में हैं । उनका संकल्प पूरा हो गया ।

आप जो तपस्या करते हैं उस तप का फल कब मिलेगा, कैसे मिलेगा, किस तरीके से मिलेगा, उसको आप नहीं जानते और न जानने से क्या होता है ? आप करना छोड़ देते है। आप जो श्रद्धापूर्वक करते है वो छूट जाता है । कैसे छूट जाता है ? मन में दुविधा हो जाती है । करते तो हैं कुछ होता नहीं – ये जो संशय है इससे किये कराये पर पानी फिर जाता है । उतना करने के उपरांत भो आपके पास कुछ नहीं होता है, इसलिए तुम्हें सद्गुरू चाहिए सत्पुरूष चाहिए । भगवान की भी आराधना कीजिए, राम, कृष्ण आदि जो अवतार हुए है उनकी भी आराधना कीजिए लेकिन जब तक वहाँ से, उस जगह से तुम्हें आशीर्वाद नहीं मिलता जब तक आशीष फलीभूत नहीं होता तब तक भजन–पूजन, व्रत और उपासना नहीं बदलनी चाहिए और न ही छोड़ना चाहिए । हम नहीं जानते कब मिलेगा, लेकिन वो मिलता है, होता जाता है । आप लोग कभी, बोलते हैं न, कि देखो मैंने सोचा, हो गया । मैंने सपना देखा वैसा हो गया । देखो मैं ऐसा करना चाहता था, हो गया । ये वही तपस्या का फल है । ये उधर से आता है, मिलता है फिर चाहे भगवान से या सद्गुरू से आये लेकिन आता है ।

आप भगवान या सत्पूरूष से पाने के लिये पूजन भजन–यज्ञ करते हैं, यही आत्म–यज्ञ है । उससे बढ़कर दूसरा यज्ञ नहीं है । जब आप अपने आपको समर्पित नहीं कर देगें तब तक 'मैं' का पलड़ा छूॅटता नहीं है । और जब तक 'मैं हूॅ' 'मैं

करता हूँ' ये रहता है तब तक कुछ भी नहीं मिलता । दुख के सिवाय, उपहास के सिवाय और समाज में हम हंसी के पात्र हो जाते हैं । इसलिए कर्म करके सो जाइये । बोलो, कि मुझे समझाइये, मुझे शक्ति दीजिए–कैसा करना, कैसा नहीं करना । मुझे सूझ–बूझ दीजिए ताकि मेरा जीवनयापन कल्याणमय हो और मेरा सब काम हो, आप ही तो सब कुछ हैं, जीवन के आधार हैं । जब आप से समर्पण कर दिया, सब कारोबार भगवान को समर्पण कर दिया तो प्रतिनिधि होकर अपना कार्य करिये । मन में रखना की ये सब भगवान का है हम तो भाई, एक सेवक है । जो कार्य हमसे होना है वो दृढ़ निश्चय हो गया तो भी आपका काम होता है । भरोसा चाहिए । एक बार भार डाल दिया उस पर, तो डाल दिया फिर लेना–देना उसका काम है और बराबर होता है । सद्‌गुरू हो, सत्पुरूष हो या भगवान हो जिसको आप मानते है उनसे बराबर होता है । ये दृढ़ता चाहिए, ये भरोसा चाहिए, ये विश्वास चाहिए । अपना काम सिर्फ ऐसा करना ऐसा जो कुछ बाकि है, सब तुम्हारा है, मेरा कुछ भी नहीं है । जब हमने अपने आपको सौंप दिया है तो तुम्हारा काम है करने का । **''योगक्षेमम् वहाम्यहम्''** ये कृष्ण ने कहा है । जो चाहिए हम पूरा कर देते है । तुम्हारा कल्याण भी करता हूँ । भगवान के प्रिय भक्त, प्रिय पात्र बने रहो । इतना आश्वासन जब दे दिया तो हमें इस बात पर बिलकुल न्यौछावर हो जाना चाहिए फिर चाहे सद्‌गुरू हो, सत्पुरूष हो या भगवान हो । आपको ये आधार ढूँढ़ना ही पड़ेगा और ढूढ़ने पर आश्वासन चाहिए– जाओ हो जाएगा ।

मानव प्राणी हर एक देश में, हर संस्कृति में हर एक भाषा के जो लोग सब कोई न कोई एक, आधार मानते हैं । वो चाहे कोई भी जाति के हो, कही के भी हो किसी भी मुल्क के हों एक भगवान को जरूर मानते हैं । कोई अल्लाह है, कोई यीशु है, कोई कृष्ण है, कोई राम है, कोई शंकर है–कोई न कोई आधार वो मानते हैं । ये हमारा भगवान है ये हमारा सब कुछ पूरा करेगा लेकिन, कब पूरा करेगा जब इतनी तपस्या करो, इतनी आराधना करो कि तुम्हें ऐसा आश्वासन मिल जाए और आश्वासन मिलने पर उतने दिन में वो कार्य भी हो जाता है । तुम्हीं करोगे और तुम्हीं सब कुछ हो, ऐसा बोझ उन पर डाल करके दृढ़ निश्चय, विश्वास, भरोसा और पूर्ण श्रृद्धा के साथ बठना । आपको बाराबर जवाब मिलेगा । बच्चे को बगैर रोये, मां दूध नहीं पिलाती–आप लोग बोलते हैं, सब बोलते हैं तो रोते क्यों नहीं भगवान के सामने–अंधेरे में, रात में, और सो जाना । कुछ दिनों के बाद

आपका सब काम हो जाएगा । आप सालभर करिए । बहुत लंबा समय दिया हूॅ । अगर ऐसा बोलकर सोये तो एक साल में बहुत कुछ हो जाएगा और उठते समय प्रणाम करना, कहना–आपने मुझे उठाया है, मैं चला लाभ–हानि तुम जानो । ये बोलकर अपने काम में लग जाना । तू जान, तेरा कारोबार जाने मैं नहीं जानता ।

उत्तमा सहजावस्था मध्यमा ध्यान धारणा,

मंत्र जपस्यात् अधमः, होम पूजा अधमाधमः ।।

ये वेदांत है । ये सहजावस्था है । जिनको तुम समर्पित हो तन मन धन से–वहीं रोओ चुपचाप आराम से कोई देखे न । मुॅह बंद करके, हो गया । सबके पास देव है । अंतरात्मा सबकी देव है । आत्म देव स बढ़कर कोई देव नहीं है वो तुम्हारे लिये इष्ट है । तुम्हारे अंदर ही है । तुमने सब कुछ समर्पित कर दिया । बस, वहीं अंधेरे में, अकेले में झगड़ा करो, बारह महिने करो । ये उत्तमावस्था है । न नाक कान दबाना, न पूंछ दबाना, न कुम्भक करना, न रेचक करना, कुछ भी नहीं करना पड़ता । जैसा बताया खाली वैसा करो आपका ये लोक और परलोक दोनों सिद्ध हो जाता है । आपके जीवन में परिवर्तन हो जाएगा । आचरण में, भाषा में कृति में परिवर्तन आ जाएगा । आप करके देखिये, सहज बता दिया इसाको सहजावस्था कहते है, माने संसार में रहकर सब सुख–दुख भोगते हुए जैसा बताया गया वैसा करिये । **''मध्यमा ध्यान धारणा''** – ये मध्यम उपासक है । मुझे अभी ध्यान करना फिर अपकी समर्पित बुद्धि कहॉ रही, फिर समर्पण कहां रहा आपके कार्य में । **''मंत्र जपस्यात् अधमः''** मैं तो दस माला जपता हूॅ एक माला बाकि हैं । य अधम साधक है । और 'होम पूजा धमाधमः' होम अधम से भी अधम है । भई काशी जाते है तो मेरा सवा रूपये ले जाना, वहां हवन करा देना । पैसा हवन होता है, पैसे से दान–पुण्य और सेवा खरीदेते है लोग । जो इतनी दूर संभालकर ले गया, वहां जाकर इतना काम किया जिससे सवा रूपया चढ़ाया उसको मिला न कि इसको । इसलिए सेवा स्व हस्त से होनी चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति अपने–अपने प्रकार से सेवा करता है । सेवा के प्रकार भिन्न–भिन्न हैं । **'सेवाधर्म परम् गहनो योगिनामप्यगम्यः'** । ये योगी लोग भी नहीं समझ सके कि हम कैसे इस संसार की सवा करें । वो अधूरे पड़ गये । ये संसार बहुत विचित्र है । इसलिये केवल इतना ही तो करें, पीछा करने से बराबर मिल जायेगा । सब कुछ हो जायेगा । ये

सब मेरा अनुभव है जो आप लोगों को मैं बोल रहा हूँ । जिसको सद्गुरू मिल गया, सत्पुरूष मिल गया, भगवान मिल गया जिसको आप समर्पित है तन, मन, धन से तो बराबर होता है । बड़े–बड़े कार्य हुए है । इस लोक का सब कारोबार बन जाता है ।

उस लोक का भी बनता ही है । **'' मुक्तो नात्र संशयः''** – उसी छड़ से मुक्त हो गया वो, जिस दिन से समर्पित हो गया । बस, आप अपने संसार में रह करके प्रतिनिधि होकर सब कार्य करिये । प्रतिनिधि हूँ , सेवक हूँ उनका । सेवा कार्य करता हूँ बाकि सब तुम्हारा है ।

सद्गुरू, सत्पुरूष तो कुछ मॉगता नहीं, न भगवान मॉगता है । भगवान तो खाली मन मॉगता है क्योंकि भगवान के पास मन नहीं है । भगवान कहता है कि तू मन अर्पण कर मेरे को सब मिल गया । जब मन ही दे दिया तो फिर तुम्हारा रहा क्या । इसलिये मॉगना कैसे–गुपचुप रात में या प्रातः काल में, जब सोओ, जब उठो, नौ महीना, बारह महीना करिये आपके जीवन में बहुत परिवर्तन हो जायेगा । मैं अपने अनुभव और तब के आधार पर बोल रहा हॅ । जो मिला है वही सिखाते हैं, वही हम बोलते है । मैं बचपन से भीख मॉग रहा हूँ भगवान से । मैं आदमी के पास नहीं गया । अब घर है, चलो भई, पानी ला दो । भूख लगी है । इतना भीख नहीं है मैंने वो भी नहीं किया । शंकराचार्य जी ने प्रमाण दिया है कि

'क्षुध –व्याधिश्च चिकित्स्यतां प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यताम्–

भावार्थः– भूखरूपी व्याधी पर भिक्षारूपी दवा का उपयोग करना चाहिए ।

शरीर की रक्षा करने के लिये, शरीर पात न हो, आत्म दर्शन के लिये, आत्म साक्षात्कार के लिये, तपस्या करने के लिये शरीर को रखना जरूरी है । इसको रखने के लिये–**भिक्षोर्चनम्** । **ओम् भवतु भिक्षाम् देहि**–ये बोलकर । कभी घी घना, कभी मोठी चना, कभी वो भी मना, जो भी मिले, लेना और खाना है अपने में मस्त रहना है । हम गृहस्थ है, गृहस्थ तो भीख मॉगता नहीं, वो तो उपार्जन करता है, और उसी में मगन रहता है ।

सहज जो अवस्था होती है–

''सहजम् कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत''

ये सब दोषमय दिखता है लेकिन ये सहज कर्म है । सदोष भी है तो भी नहीं छोड़ना है । बाल– बच्चे , लेना देना ये सब दोष है, दिखता है लेकिन उसको छोड़ना नहीं । यह उत्तम सहजावस्था है । इसी अवस्था में रहकर, बंधन में रहकर, शरीर को स्वस्थ्य रखकर अपना भजन पूजन करना चाहिए । भगवान से नहीं मॉगेगे तो किससे मॉगेगे । कहते न– आप से नहीं मॉगे, ठीक है लेकिन मॉगने का तरीका होता है, चुपचाप, कोई समझे न जाने, होता है । एक धन मॉगा और एक आत्म दर्शन मॉगा, दोनों को मिला ।

रामायण में राम ने हनुमान को कहा कि **''सो अनन्य जाक अस मति न टरै हनुमंत''** –जिसका मन माने बुद्धि, मति माने बुद्धि, जिसकी बुद्धि अनन्य भाव से माने एक भाव से हो गई है बस, यही भगवान है । इनसे मेरा सब काम हो रहा है और मेरा कोई नहीं है । इतना पक्का होना जैसे मेरे पति के सिवाय दूसरा पति नहीं है । ये जो व्रत है इनसे ही मेरा सब काम हो रहा है । ऐसी धारणा होनी चाहिए । ये माला–फाला से कुछ नहीं होता । **'सो अनन्य जाके अस'** –इस प्रकार से अनन्य भाव जो जाये, दूसरा नहीं । 'भाव नहीं दूजा–भाव तो निराला नाही दूजा' – तुकारामजी ने ये कहा, क्यों? **पांडुरंग मनी ध्यानी मनो पांडुरंग** । ऐसा है । सब करो माला जपने की जरूरत नहीं, आंख बंद करके आसन पे बैठने की जरूरत नहीं है । यही भक्ति योग । यही सीधा–साधा सरल उपाय है, सेवा करने का । सेवा क्या है? सिर्फ हमने अपने आपको अर्पण कर दिया और जो कुछ चाहिए, बोलिये । वो सब कुछ देता है । कबीरदास ने बताया है कि' कुछ लेना न देना मगन रहना – क्या? कुछ लेना देना नहीं, पड़े रहना । कहॉ मगन रहना? किधर? कैसा? कहत कबीर सुनो भाई साधो– ''गुरू के चरण में लिपट रहना सोते समय वहीं तकिया बनाओ और सो जाओ । जगे तो तकिया में, सोये तो तकिया में और जो कुछ बोलना चालना है हठ करके बोलिए ।

आद्य शंकराचार्य ने भी प्रमाण दिया है कि–

''गुरू चरणांबुजनिर्भर भक्तः संसारात् अचिरात् भव मुक्तः''

– ये प्रपंच से मुक्त हो गया । **स मुक्तो नाऽत्र संशयः** । गुरू के चरण कमल में, अम्बुज नाम कमल का है जिस दिन वो निर्भर हो गया संसारात – ये संसार के प्रपंच से दुख–सुख से, पुनर्जन्म से अचिरात माने तत्काल वो मुक्त हो गया । महाराजा जनक ने अनेक जन्मों तक तपस्या की और अंत तक राज किया महारानी सुनयना के साथ । वो यागी थे और परमोच्च आसन पर आधिष्ठित होकर भी वे संसारी जैसे रहते थे । राजसिहांसन पर बैठकर न्याय चुकाते और सबका पालन–पोषण किया करते थे । ये सत्यकथा है । हम लोग खाली आंख दबाये नहीं, नाक दबाये नहीं कि बस पहॅुच गये । कैसे कहॉ पहॅुचे नहीं कुछ पता नहीं । अनेक जन्मों के बाद ये तमाम बाते होती हैं । मंजिल बहुत दूर हैं बिल्कुल पास में है और तुम्ही हो, दूसरा कोई नहीं । उपनिषद में आत्मा के विषय में कहा गया है कि – **''तदेजति तन्नैजति, तद्दूरे तद्वंतिक। तदंतरस्य सर्वस्य, तदु सर्वस्यास्य बाहयतः ''** । वो जो आत्मा है वो चलता है, कहे नहीं नहीं वो चलता नहीं । **'तत् न एजतः'** वो नहीं चलता क्योंकि सब जगह वही है । अंदर बाहर सब जगह वही पूर्ण है तो चलेगा कौन ? वो चलता वलता नहीं । **तद्वंतिके बोले–नहीं नहीं तदु सर्वस्यास्य बाहयतः** – वो अंदर होते हुए सबके बाहर ह । हम सब लोग उस आत्मा के अन्दर ही है । आत्मा जो पद है उस पद में हम सब हैं लेकिन ऐसे भ्रम और भ्रांति, कामिनी और कांचन का इतना पीछा हम ने किया है कि अपने दुनिया, सारा गोल और ब्रम्हाण्ड उसके अन्दर बाहर हैं । ऐसी कोई जगह नहीं, जहॉ वो न हो । ये हम भूल गये हैं । सिवाय कामिनी कांचन के और कुछ भी नहीं दिखता आपने को । ये सोचने की बात है । वहीं व्यक्ति देखिये कामिनी कांचन में रहते हुए, राज भोगते हुए, उन्हें देह का ख्याल नहीं रहा, राजा जनके विदेही थे इसलिए आग में भी नहीं जलते थे । ये सब शक्तियॉ आगे चलकर मिलती हैं ।

राज जनक के गुरूजी थे याज्ञवल्क्य जी । वो कभी कभार आ जाया करते थे । बड़े आदर सम्मान से उनकी पूजा अर्चना होती थी और राजा जनक भेंट आदि करते थे क्योंकि उस जमाने में राजाश्रित थे । त्यागी माने ब्रम्हावेता, ब्रम्हा तत्व में जो लीन रहते थे या उस ओर जाते थे, ऐसे लोगों को राजा आश्रय दिया करते थे । एक दिन ऐसा होता है कि उनके गुरूजी याज्ञवल्क्य जी आ गये सद्गुरू थे, उच्चासन पर बैठ गए पूजा किए, कुछ स्नेह समर्पण भी किया तो महाराज जनक जी ने कहा कि आप आते हैं तो बड़ा आनंद आता है, लकिन आप जब चले जाते हैं

तो अभाव सा मालूम होता है और कुछ सूझता नहीं । इसलिए आप कृपा करिए, इसे दूर करें ताकि हम अपने कार्य में सफल होवें और आशीष भी कीर्तिमान होकर संसार में छा जाये । याज्ञवल्क्य जी बोले–राजन आपने चोरी की है, इसलिए आप बेचैन हैं । महाराज चकित हुए, क्या बात है, कहॉ क्या बात है, कहॉ चोरी की ? महाराज बोले– क्षमाप्रार्थी हूॅ । मुझसे क्या चोरी हुई है । मैंने तो तन, मन, धन, इन तीनों का जल लेकर, संकल्प करके अर्पण कर दिया है । ये सब आपका है । ऐसी कौन–सी –चीज हमने ले ली ! जो भी था सब कुछ अर्पित कर चुका हूॅ । गुरूजी बोले– आपने तन के साथ, धन के साथ मन भी अर्पित कर दिया था वो मन, आपने वापस ले लिया है । इसलिए आप बेचैन है । सारा जंजाल उस मन में फिर से वापस आ गया । ये स्तेय हुआ कि नहीं? अस्तेय तो नहीं, स्तेय माने चोरी । आपने जब अर्पण कर दिया तो आदेश हमारा है । आप आदेश का पालन करें । आदेश क्या होता है? जिसका पालन हो, उसको आप टाल नहीं सकते वरना **Terminate** हो जाते हैं । ये कानून धर्म में भी है और राज में भी है ।

ये आपने क्या किया? मन जिसमें दुःख का भण्डार हुआ है वापस ले लिया । जब वापस ले लिया तो मेरा मन, मेरा मन शुरू हो गया । अब मैं क्या करूॅ । अरे तुमने दे दिया, मैंने ले लिया, उसी वक्त ले लिया था तो तुमको सुख नहीं, दुख नहीं, कुछ भी नहीं लेकिन तुमने मन वापस ले लिया तो सुख दुख जो आपने दे दिया था, आपने वापस ले ले लिया । मुझसे कहकर तो वापस नहीं लिया जब कहकर लिया होता तो ठीक होता । जब आपने कहकर वापस नहीं लिया तो ये चोरी है । तो चोरी की सजा है, भोगो । उस दिन से महाराज जनक गुरू जी के आदेशानुसार कर्तव्य पालन में लग गये । बाकि समय में गुरूजी को मन दे दिया, अपना कोई विचार नहीं, कोई तन नहीं,, कोई काम नहीं, कोई मन नहीं, कोई धन नहीं, अपना कुछ नहीं है । बस गुरू के चरणों में बिछे रहना–पहले जो बताया था आप लोगों को ।

साधो! माने साधन, आपको साधना है । बिना साधे, बिना मेहनत किये कुछ भी नहीं मिलता, इसमें पैसा, कौड़ी और छदाम भी नहीं लगता । कितना सुंदर, सहज उपाय है । नाक, कान पूॅछ दबाने की जरूरत नहीं है । गुरूजी को जानते हैं, पहचानते हैं और आपको विश्वास है तो सब जगह आनंद है कोई भी व्यक्ति हो

सीधा होकर रह जाता है । सॉ भी आ जाय तो वह भी सीधा होकर रह जाय । वह टेढ़ा चलता है लेकिन जब बिल में घुसता है तो सीधा हो जाता है । जब सद्‌गुरू से दीक्षा लिया तो–श्री सद्‌गुरू चरणौ शरणमह प्रपद्ये–आपने शरण ले लिया, शरण में गए माने, तन, मन, धन तीनों समर्पित हो गए । इसी का नाम शरण है । विभीषण भी शरण में रहते है । जितने भी भक्त सब भगवान की शरण लिये हैं ।

तात्पर्य ये है कि ये सब गुरूजी का कारोबार है । सारा संसार गुरूजी का है । हमारा संसार गुरूजी का है । हम तो उनके आदेश का पालन करतें हैं । फिर जो कुछ, जैसा प्रारब्ध होगा, जितना लेना देना होगा आपको देंगें, लेंगे और जीवन यापन के अंदर न राग रहेगा, न द्वेष रहेगा, न काम रहेगा, न क्रोध रहेगा, न लोभ रहेगा, न मोह रहेगा, कुछ भी नहीं केवल भोग मात्र रह जायेगा । तो गुरूजी की बताई हुई पद्धति से बैठ जाने पर ये जितने भोग हैं, कब आते हैं कब जाते हैं, पता नहीं चलता है । इसलिए प्रतिनिधि होकर आत्म साक्षात्कार के लिए लग जाना चाहिए ।

उत्तमा सहजावस्था–चौबीस घंटे आप जहॉ कहीं आते जाते हैं, काम है आए गए कर लिए । ये तो भोगना ही है । गुरूजी का आदेश है कि प्रपंच छोड़ना नहीं है । हमको तो एक सिक्के के दोनों बाजू होना । प्रपंच भी चाहिए और आत्मानुभूति भी चाहिए । जब तक आप सद्‌गुरू को समर्पित नहीं करते, पूरी तरह से समर्पण नहीं होता, तब तक ये आना जाना और ये दुख सुख बना रहेगा । अहंकार बहुत दबायेगा कभी–कभी, उससे आदमी बिल्कुल बेवफा हो जाता है और अपना ही नाश कर जाता है । मनुष्य स्वयं अपने नाश का कारण है । तो गुरूजी को तन, मन, धन दे दिये और प्रतिनिधि होकर रहिए । ऐसा मन सर्मर्पित करके सब काम करिए मेरा क्या है? सब तेरा है । ये 'तेरा' में ही भारी रहस्य है ।

पंजाब में गुरूनानक जी हुए है । अनेक जन्मों तक वे योगी रहे । इस जन्म में भी तो आये तो बचनपन से वो सब था लेकिन उन्होंने प्रपंच नहीं छोड़ा । मॉ बाप का पालन पोषण करने के लिये एक मुस्लिम जागीदार के यहॉ किराना दुकान में सर्विस की । जो कुछ पैसा आता था शाम को पहुॅचा दिया करते थे और हिसाब किताब बराबर वो आकर देखा करते थे । अब अनेक जन्मों के योगी तो थे । अभी जो घटना सुनाई मन जो अर्पण कर दिया, उसे वापस लेने पर वो चोर हो गये ।

जब तुम चोर हो गये तो फिर कहीं के नहीं रहे तो तुम दंड के पात्र हो गये इसलिए जाने अनजाने में दंड मिलता रहता है, लेकिन ये समझने पर बहुत बातें दूर हो जाती है । एक दिन ऐसा मौका आया–इतवार या छुट्टी का दिन था, लोग राशन लेने आये । कोई कहे एक सेर मेरा, दे दिया । दो सेर दे दिया । इस प्रकार तीन सेर, चार सेर, ग्यारह सेर, बारह सेर, तेरह सेर मेरा । फिर जो तौलना शुरू किया तेरा तेरा करके जितना दुकान में अनाज था, सब बांट दिया । सब लेकर चल दिये, कोई पैसा नहीं दिया । जो दे दिया सो दिया, नहीं दिया तो ख्याल नहीं । ये खबर नवाब साब तक पहुॅची की दुकान आज उसने लुटा दिया है । कैसा पागल आदमी बिठा दिये हो, तेरा तेरा कर सब बांट दिया है । तुम्हारी दुकान हो गई खतम । अब कल से क्या रहेगा वहॉ । ताला लगा दीजिए । रात हुई, गुरूनानक जी रोजमर्रा की तरह जाकर अभ्यास में लग गये । रात में वे अभ्यास किया करते थे । सुबह दुकान खुलने पर नवाब साहब आ गये । बुलाये उनको । आये, नमस्कार वगैर हुई । नवाब साब बोले–दुकान खोलो । दुकान खुल गई । नवाब साब अंदर गये, बोले–मैंने सुना है कि आपने सब बांट दिया है तेरा तेरा करके । जिसने जो मॉगा! तेरा है, तेरा है, ये तो मैंने कहा, बराबर है बोले–बही खाता कहॉ है? वह लाया वहीं खाता । देखा–ये तो सब बराबर है । जो जो लेकर गये है, उनका नाम है और उनका दाम है । केश खोलकर देखते है तो केश भी पूरा है । अरे! ये ऐसा कैसे हो गया । अब जितने लोग थे हॅसने वाले कि आज ये पकड़ा गये गुरूनानक, इसको दंड होने वाला है । उन सबका मुॅह ठंडा हो गया नवाब ने कहा–ये दुकान तुम्हारी है जैसा चाहो, चला । अब मैं तुमको नहीं पूछूॅगा और लोगों को बताया कि इस आदमी को देखो और पहचानों ।

इस प्रकार समर्पित होकर, प्रतिनिधि हो करके आदेश का पालन करना है । इसलिए हमारे सिद्धांत में एक सिक्के के दो बाजू, दोनों बराबर होना । तब वो इधर भी प्रपंच में चलता है । और उधर आध्यात्मिक, आत्मयोग, आत्मिक जो अनेक अपवर्ग है, तात्पर्य ये है कहने का कि एक दफा आपने मन दे दिया तो दे दिया । एक और सत्यकथा है–नागपुर के एक वकील थे । पति–पत्नि थे, उनकी संतान नहीं थी । गजानन महाराज का सप्ताह आ गया । नौ दिन या सात वे हमेशा करते थे–कोठी बंद कर देना, किसी को देखना नहीं, किसी को छूना नहीं और पाठ करना तथा सेवा करना–करते थे । बैठ गये अपने रूम में, पत्नि वहीं सेवा करती

थीं । एक फल खाकर और पानी पीकर रहते थे । कोर्ट में एक केस था जिसकी वे तारीख भूल गये थे । अब क्या होता है ये मगन रहते हैं धुन में और केस की तारीख आ गई जिसको व भूल गये थे । कोर्ट में पुकार हुई, पक्षकार आ गये, वकील साहब भो आ गये पेशी हुई, बातचीत हुई । इन्हीं के पक्ष के तरफ फैसला हो गया । फाइल दिये, वकील साहब ने दस्तखत किये, मुकद्दमा जीत गये । आनंद मंगल हुआ और वो लेके चले जाते है घर को । अब ये बात किसी को मालूम नहीं । वकील साहब तो अपने घर में बैठे है, अपने रूम में बैठे है । कहीं बाहर तो जाते नहीं थे और गये भी नहीं ।

उनका सात दिन या नौ दिन पूरा हो गया । सुबह उठे, जो कुछ खिलाना पिलाना था, खिल पिला दिये और बांट दिये । वो एक पोथी बांधते थे, उस पोथी में एक कागज उस दिन के मुकद्दमें का दिखा जिसकी तारीख निकल गई थी । अरें! ये तो केस रह गया, एक्सपार्टी हो गया, अपने क्लाइंट का नुकसान हो गया । वो बिल्कुल घबरा गये । भागे, गये कोर्ट रिसेस में जाके प्रार्थना किये । रिसेस रूम में जज या मजिस्ट्रेट ने बुलाकर उनको जलपान कराया । केस के बारे में बातचीत की । बातचीत के समय जज ने कहा—अरे, वो केस तो आप जीत गये है । अपतो आये थे । आप इतना अच्छा कास—एक्जामिनेशन किया कि जिंदगी में आप किसी केस को ऐसा नहीं लड़े है । आपका नान—स्टॉप बोलना चलता रहा और आप केस जीत गये । वकील साहब आश्चर्यचकित रह गये! मैं केस लड़ा ? मैं कोर्ट आया? फाइल कहॉ है? जज ने फाइल मॅंगवाई । देखो तो उनके हस्ताक्षर थे । बिल्कुल उसी के हस्ताक्षर । तारीख बराबर, टाइम बराबर । मेरे हस्ताक्षर । मेरी तारीख । मैं कोर्ट में आया । मैं तो कोठरी में बंद था, मैं तो कभी आया ही नहीं । मैं तो गजानन महाराज की सेवा में लगा रहा पूजा पाठ करते हुए । जज कहते है—जब आप आये नहीं तो हस्ताक्षर किसके है ? एक भी रेशा टेढ़ा है क्या ? कहीं भी कम ज्यादा है क्या ? देखा—नहीं नहीं नहीं । अरे ऽऽऽ ! सीता बर्डी पोलिस स्टेशन के पीछे गली में नागपुर के रहने वाले है । वो रो दिया और वैसे ही भागा । घर आया बताया अपनी पत्नि को । और उस दिन से उसने प्रैक्टिस करना छोड़ दिया । ये सत्यकथा है आप लोग भी सत्य मार्ग में आ गये है । अनेक जन्म बीतते है । आप लोगों का अनेक जन्मों का पुन्य उदय हुआ है तब से सतसंग की और

आप झुके है । बाकि जो पढ़ते है वो प्रसंग है लेकिन ये सब सतसंग । अनुभव की बात है । तो एक बार आपने दे दिया तो दिया ।

तात्पर्य ये है हमारे कहने का कि भक्ति हो तो इस तरह से । सेवा हो तो इस तरह से । दे दिया माने तो दे दिया, ये नहीं भूलना चाहिए । फिर गुरूजी जाने हम नहीं जानते । आप जो कारोबार करते है वो करना योग्य है । कर्तव्य है । जो सर्विस, नौकरी चाकरी कोर्ट जो कुछ है वो करना जरूरी है । जो भोगना है, वो भोगो । देखो कितने अच्छे उदाहरण है—गजानन महाराज का बता दिया, गुरूनानक जी का बता दिया, अभी आधुनिक काल में वकील साहब का बताया आपको । ये सत्य है । किसी से तुलना नहीं करना चाहिए । अपना, अपना है । अपना बोले, अपना देखें । अब देखिए, बड़ा बनाया गया, भजिया बनाया गया । सबको थाली लगा दी गई और परोसा सबको, तो बाजू वाला क्या कहता ह—इनकी थाली का बड़ा, बड़ा है अपने से, माने दूसरे की थाली का बड़ा और अपना छोटा । ये जो हमारी वृत्ति है—हमकों कम मिला, उसको ज्यादा ये छोड़ देना चाहिए और अपनी—अपनी भोगो अपनी—अपनी करो और अपनी—अपनी में रहो । इस प्रकार से निर्भर हो जाइये । काम भी चलता है, दाम भी मिलता है । और राम भी पास है वो है आत्मा राम । हम सब उस आत्मा के अंदर है । अपनी आत्मा के भीतर हम सब है । न तपस्या करना पड़ता है न त्याग करना पड़ता है । कुछ भी नहीं करना पड़ता, खाली समझकर रहना पड़ता है । **'उधो समुझि पग रखना'** —खाली समझ के रहना चाहिए । यही उत्तम सहजावस्था है । योग मार्ग का विषय है इस प्रकार से अपने सामने रखा है । और इसी को हम भक्ति योग कहते है ।

'भक्ति, भक्त, भगवंत, गुरू नाम चार रूप एक' —भक्त नाभादास के ये अनुभव के बोल है कि भक्त और गुरू ये दोनों एक है लेकिन वो सद्गुरू, सत्पुरूष होना चाहिए । जिसको आप भगवान कहते है, राम कृष्णादि भगवान कहते है इस प्रकार सानिध्य होनाा चाहिए ये सानिध्य में रहकर के, वो जैसा बताते है वैसा करिए । कुछ नहीं होता है तो उनका काम है सब उन्हीं का है, ऐसा समझकर चलिए । तो ये कर्म योग के अंतर्गत भक्तियोग के अंतर्गत ज्ञानयोग है । इसमें तीनों योग है इसमें ज्ञानयोग भी है, भक्तियोग भी, कर्मयोग भी है । इन तीनों के बिना कोई कार्य संपन्न नहीं होता । वो चाहे सन्यासी हो, बैरागी हो या महानुभाव हो । आप लोग पुण्यवान प्राणी है । अनुभव और आत्मबल जो मुझे प्राप्त हुआ है वही आपके सामने

हम रखते है ये सत्य है और इसी को सत्य कहा गया है । जैसा देखा गया, सुना गया और किया गया, इन तीनों के सम्मिलित रूप को सत्य कहा गया है । मैं इस सत्य को सत्य मानता हूॅ । इस सत्य को मैं नहीं मानता की ये माया है, ये ठगिनी है, और ये पापी है इससे दूर रहो । इसे छूने मत दो । मेरो सत्य ये सत्य नहीं है । मेरा सत्य ये है कि मैं जैसा हूॅ वैसे सब है । मैं जैसा हूॅ वही मैं चाहता हूॅ । इस सत्य तत्व के आधार पर **स्वामी रामदास ने कहा था**–

आपुले सारिखे, करितो तत्काल ।

न तया लाग काल वेल ।।

मैंने ऐसा अर्थ किया । जिस सेकेण्ड में आपने दीक्षा ली उसी सेकेण्ड से आप तर गये । लेकिन आदत, हेबिट मराठी में सवय कहते है । तुम्हारी सवय इतनी दृढ़ हो गई है कि कामिनी कांचन के सिवाय दूसरा कुछ याद हीं नहीं आता है लेकिन कामिनी में रहकर के भी तुम्हें ये याद करना है, ये ध्यान में रहना चाहिए जो अभी आपको बताया गया है ।

मैं भक्त हूॅ–ये अहंकार है । जो समाज से विभक्त है वो काहे का भक्त । जो विभक्त नहीं समाज से वहीं भक्त है । हमारे ऊपर जो समाज का ऋण है, घर से लेकर कोटुम्बिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक–ये सारे ऋण जब तक नहीं चुकाओगे तुम मुक्त नहीं हो सकते । इसलिए जो समाज से जो विभक्त नहीं वही भक्त है ।

तो तात्पर्य ये कि सृष्टि अनादि है । प्रकृति और पुरूष दोनों अनादि है । ये दोनों एक है । संसार चलाने के लिये ये दोनों रूप बन गये है लेकिन, अनादि अनंतकाल से, अनादिकाल पर्यन्त है । इसका अंत नहीं इसलिए इसके होने से अनंतकाल पर्यन्त इसको धारण किया और अनंतकाल पर्यन्त था । इसलिए नाम है धारणा–धारणात धर्म इति उच्चते इसी का नाम, धर्म है ।

।। इत्यलम् ओम् शांति, शांति, शांति ।।

।। ''जय गुरूजी'' ।।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ''ज्योति दर्शन''

Be Truthful, Insignificant, Charity & Penance ये चार शब्द है । घुसे जी ठीक है न ? हाँ गुरूजी ठीक है ।

Truthful = अनुभव के ही बोले बोले जाय । अनुभूत विषय ही बोला जाय ।

Insignificant= जिस विषय के लिए आप हमसे बारबार मिलते है इसके लिए ये कुछ काम का नहीं है । वो कुछ भी काम में आता नहीं है ।

Sacrifice = सदा प्रवास में रहते, जहाँ महान लोग रहे है । जिनके शरीर नहीं मिले ऐसे महान लोग हुए है । ऐसे जो महान अनुभवी लोग हुए है, वहाँ रहे, वहाँ से कुछ मिलने के बाद उसको आचरण में उतारे । अपने स्वभाव के अनुसार या बुद्धि के वृत्यानुसार प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है । सोचने के लिए, कुछ करने के लिए, आचरण के लिए, जो अच्छा लगे वैसा आचरण में लाए और तपस्या करें और आनंद में रहें । चार शब्द है– Truthful, Insignificant, Charity & Penance- आप विद्‌वान है, पढ़े लिखे है, भाषा को जानते है, सामाजिक अनुभव, राजनीतिक अनुभव, पारिवारिक अनुभव है और धार्मिक तो मैं नहीं जानता हूँ, समाज जिसको धर्म कहता है, वो मेरे समझके बाहर है । वो धर्म क्या है? वो प्रकृतिक धर्म है । वो प्राकृतिक धर्म है । प्रकृति त्रिगुणमयी है । सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण यह आप जानते ही है । तीनों गुणों का आपस में कॉम्पिटिशन होता है । तमोगुण कहता है, मैं रजोगुण को दबा दूँगा । रजोगुण कहता है, मैं तमोगुण को दबा दूँगा । और सत्वगुण कहता है, मैं सबको दबा दूँगा । इस कॉम्पिटिशन में हम सबका जीवन व्यतीत हो रहा है । प्रायः मैं अपने ओर से कह रहा हूँ । औरों परसे नहीं कह रहा हूँ ।

Those who are free from influence of the tree modes of nature, come to me that mean the supreme. शॉटफॉर्म आपके सामने रखा है । यदि आपको कुछ पूछना है तो पूछ सकते हो । यदि मुझे अनुभव होगा तो मैं अनुभव के बोल आपके सामने रखूँगा । गुरूजी हम तो आपको कुछ कहेंगे नहीं । कल आप ने ही

ज्योति दर्शन के बारे में प्रस्तावना बतायी थी, कि आप ज्योति दर्शन के बारे में बोलेंगे ।

ज्योति दर्शन तभी, जब आचरण में , पहले आसन दृढ़ होना चाहिए ।

''स तु दीर्घकालनैरन्तर्यसत्कारासेवितो दृढ़ भूमिः ''

पहले आसन दृढ़ होना चाहिए । कौन सा आसन आपके लिए अनुकूल है, बहु कालपर्यंत आप बैठ सकते है । वो आसन आपने आचरण में लाना चाहिए । आप अनंत काल से जन्म ले रहे है । और संसार से विदा हो रहे है । अनंत जन्म का पुण्य जब उदय होता है जब मनुष्य आत्मा की ओर झुकता है । आपका जो इष्ट, इष्ट माने जिससे मेरा कल्याण हो सकता है । ''आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवति ।'' "Divinity manifests itself in the form of light.'' Light of the body is the eye. Becomes single eye, the body shall be full of light. याने जिसको भ्रुकुटिमध्यमे ज्योति दर्शन होता है उसका शरीर प्रकाशमय होता चला जाता है । तात्पर्य यह है कि इस प्रकार से समय नियत कर दो कि, आप इतने समय तक नित्य आसन पर बैठेंगे । पद्मासन हो, सिद्धासन हो, सुखासन हो । आप कुछ नहीं करेंगे, आपको जो इष्ट है, मैं किसी से उसका इष्ट नहीं पूँछता हूँ । आपका जो इष्ट है, जिस पर आपका जीवन निर्भर है उस पर आपने अपना जीवन सौप दिया है । वो करेंगे वह बराबर । ऐसा जो है, ऐसी जो कोई शक्ति हो उसका आप जाप करो । याद करो **''अभावप्रत्ययालम्बना वृतिर्निद्रा।''** इसी प्रकार बैठने से आपका श्वास–प्रश्वास धीरे धीरे कम होता जायेगा । अभी जितना लंबा श्वास आप लेते हो उतना लंबा प्रश्वास नहीं चलेगा । धीरे धीरे कम होता चला जायेगा । जो कुछ है सब आसन में है । आप बैठकर इष्ट को सामने लाना ।

नाम लेते जाना, नाम है तो नामी भी अवश्य है । नाम है तो नामी भी होना ही चाहिए । नामी की जो शक्ति है, उसके जो गुण है, उसके भावना में मन को रमा देना । जैसा कि वो भक्ति देने में समर्थ है, शक्ति देने में समर्थ है, ऐश्वर्य देने में भी समर्थ है । वैराग्य देने में भी समर्थ है और मोक्ष देने में भी समर्थ है । मुक्त कर देने में भी समर्थ है, इस प्रकार भावना करना । भावनाओं से ओत–प्रोत करना । तो कभी नाम लेना और गुणों का चिंतन करना कि वो भगवान है । भगवान ऐश्वर्य का है । वो षडगुणैश्वर्य

संपन्न है । अपने मन को भावनाओं से ओत–प्रोत करना । संसार के, प्रपंच के विषय में न जाने देने के लिए ये निमित्त है । और निमित्त ही बराबर आपको सफलता की ओर ले जाएगी । ले जाती है, ऐसे जाते–जाते आपका शरीर बधिरता को ओर चले जाएगा । श्वास– प्रश्वास कम होते चले जायेगी ब्लड सर्क्युलेशन कम होता चला जाएगा । कान में सुनना कम होता चला जाएगा । और सब अपने–अपने गोलक में चले जायेंगे । चीटी कॉटी तो आपको बोध होता है । वो भी चला जाएगा । और आँख दृश्य देखना बंद हो जाएगा । इसको **प्रत्याहार** कहा गया है । **''स्वविषयासंप्रयागे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहाराः ।।''** तब संसार के विषयों से आपका जो मन है धीरे–धीरे खिंचते–खिंचते अपने गोल में आ जाते है । वैसे–वैसे आप अपने शरीर को भूलते चले जायेंगे । मैं आपको साधना करने की पद्धति प्रारंभ से, शुरूआत से बता रहा हूँ । कोई भी लिख सकता है । कोई भी सुन सकता है । जिसको इस पार से उस पार जाना है । जिसको अंतर्जगत में प्रवेश करना है, उसके लिए यह है सब । तात्पर्य यह है कि यह प्रत्याहार है । तो क्या होगा बाहर के विषयों से आपकी इन्द्रियाँ अपने–अपने गोलक में चले जायेंग । इससे क्या होगा, आपको अपने शरीर की सुधि नहीं रहेंगी । ये साधना कि प्रथमावस्था है । साधक इसको अंतिम अवस्था समझ बैठता है । जाने अनजाने में भी ऐसी स्थिति हो जाती है । कभी जानते हुए कभी अनजाने में भी हो जाता है । तब वो साधक महाशक्ति को धारण करने योग्य हो जाता है । वो शक्ति अदृश्य है, अब दृश्य रूप में प्रगट होने का समय पास आ गया, तब क्या होगा? **Divinity manifests itself in the form of light. ''आत्मा स्वयंज्योतिर्भवति ।।''** मैं भूल गया बताने के लिए आप ध्यान करेंगे । दोनों भवों के बीच भ्रुकुटी मध्य में ध्यान लगायेंगे । **''ध्यानम् निर्विषयं मनः''** ये मेरा विश्वास है । नाक दबाने की आवश्यकता नहीं है । प्राणायाम करने की जरूरत नहीं है । वो जो शक्ति है धीरे–धीरे प्रगट हो जाएगी । शरीर को शिथिल करो जितना हो सकेगा उतना शरीर को शिथिल करो । अब आपको स्फुरण होने लगेगा । भ्रुकुटी मध्य में भी स्फुरण होने लगेगी । और **गुदा तथा शिश्न के बीच में जो सिलाई है** उसको **पेरीनियम** कहते है । उसके बीच में भी स्फुरण होने लग जाएगा । वहाँ एक स्फुरण होने लगेगा । वो एक प्रकार का कंपन होने लगेगा । यह कपन होने का लक्षण है कि धीरे–धीरे अंतर्जगत का जो द्वार है वो खुलने का समय आ गया है

। सुषुम्ना नाडी है उसमें प्रवेश होने का समय आ गया है । वो धीरे–धीरे सचेत होने लगती है । अपेन्डायमल लाईनिंग ऑफ सेन्ट्रल कॅनल में प्रवेश होने का समय आ गया है । वो महाशक्ति तीन लेयर (1) डुरामैटर (2) ॲरक्नाईड (3) पॅरामैटर को छेदन करके भेदन करके मेरूदंड में दूसरी– तीसरा वटीब्रा में चीटिंयाँ चल रही कुछ तो भी सरक रहा है ऐसा होते–होते उसमें प्रवेश हो जाता है । आपकी श्वास –प्रश्वास बंद हो गई है । वह बाहर काम न करते इस प्रकार भीतर काम करने लग जाएगा । कभी प्रकाश आती है । कभी प्रकाश नहीं भी आती है । क्या होगा इधर से आया गया । उधर से आया गया । तब प्रकाश में आता है । जहाँ घर्षण है वहाँ प्रकाश प्रगट हो जाता है । जब बादल हवा के कारण एक दूसरे से टकराते है तब वहाँ जोर से आवाज होकर बिजली प्रगट हो जाती है । घर्षण से बिजली नहीं है तो भी बिजली प्रगट हो जाती है । जहाँ ये घर्षण है वहाँ प्रकाश आपके सामने आ जाएगा । बस प्रकाश आ गया आपका काम बन गया । बस बैठे रहो चलने दो । भ्रुकुटी मध्य में लक्ष्य रखना आसन पे बैठकर सभी इन्द्रियाँ गोलक में चले जाते है । और प्रत्याहार के बाद वह प्राण धीरे–धीरे भीतर रास्ता बनाती है और वो प्राण ही ज्योति है । वो ऊपर आकर मेरूदंड में सुषुम्ना से ऊपर आ जाती है आपके इच्छा पर निर्भर है ।

लेकिन ज्योति अवश्य प्रगट हो जाती है । आपके सामने प्रकाश आ जाता है । इसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते । क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के पुण्य के आधार से अनेक जन्मों के अभ्यास से, अनेक जन्मों के पुण्य उदय होता है, तब वो इस आत्मा की ओर झुकता है । कभी समय लगता है कभी नहीं लगता । कभी अनेक जन्म बीत जाते है, लेकिन ज्योति सामने नहीं आती है । अनेक जन्म बीत जाते है, ज्योति नहीं आती है । कभी बात करते–करते ज्योति सामने आती है । ये उस साधक के तपस्या पर निर्भर है । हमारा आशीष है कि आपको इस प्रकार से लाभ हो । आपका कल्याण हो । आपको जल्दी लाभ हो, इस मार्ग में आपकी उत्तरोत्तर प्रगति हो । बाहर की जो प्रगति है वह सब इन Insignificant है । वो कुछ काम में नहीं आता है । सब यही के यही रह जाता है । बस आपको बैठने की आवश्यकता है, और कुछ नहीं है । वो प्रकाश अपने आप प्रकाशित हो जाएगा । अभ्यास तो करना ही पड़ेगा । **''अतिशय रगड़ करें जो कोई, अनल प्रगट चंदन से होई ।''** चंदन की लकड़ी सीतल होती है, बावजूद भी अच्छी प्रकार से

रगड़ने से अग्नि प्रगट हो जाती है । इस प्रकार से आपके अभ्यास पर निर्भर है । अभ्यास कैसा होना चाहिए? **''अभ्यास वैराग्याभ्यां तन्निरोधः'' ।** तब निरोध हो जायेगा । जहाँ निरोध हो गया आपका काम बन जाएगा । **''योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।''** मोक्ष, साधना, अनुष्ठान, निरूपण लक्षण नाम योगः । मैंने सत्य आपके सामने रखा है । सब हमारे अंदर है, हम ही है । Read yourself अपने आपको पढ़ा । अभी जो ऊपर बताया उस प्रकार अपने आपको पढ़ो । मनुष्य अंतर्मुख नहीं हो सकता । आप अंतर्मुखी हो जाएगें और प्रकाश आपके सामने आ जाएगा । मेरी आशीष भी है, अगर आप अभ्यास करेंगे तो मेरी आशीष और बल भी आपके साथ है । क्या यह आपकी आशीष कृपा नहीं कहलाएगी ? घुसे जी ने पूछा –गुरूजी बोले आशीष ही कृपा है । मैं आशीष के साथ सदा के लिए आपके साथ हूँ । पूछो ना ये राजू से ? मेरे कहने का अर्थ अलग है । **वन्ही चेतवावा रे, चेतविताच चेततो । केल्याने होत आहे रे, आधि केलीच पाहिजे ।।** आधि याने आश्रमांतर होने के पहले ही करना चाहिए । उस समय आप ब्रम्हचारी है, आपके पास बल है । मैं हूँ आपके लिए उदाहरण । मैंने पहले बारह साल किया है । बाद में हमने संसार शुरू किया । जाओ मेरी आशीष है । आपका कल्याण होगा । आनंद हो, आनंद मंगल हो, कल्याण हो । **।। इत्यलम् ओम् शांति, शांति, शांति ।।**

–श्री गुरूजी

सद्‌गुरू–वाणी

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

प0 पू0 गुरू जी के प्रवचन के अंश

श्री प्रकाश भइया जी द्वारा आडियो कैसेट स तैयार किया गया

1 - तुम अज्ञानी हो-हाँ, ज्ञानिना तत्व दर्शीनां।तुम तत्व मिलता- तुम्हारे पास कोई नहीं आता,न कोई चाहिए तुमको।जो मिले,बिन मांगे मोती मिले,मांगे मिले न भीख । और जो मांगना (भीख) न चाहो,तो कमा (पलट के) के खाना सीख,हरि ऊँ, हरि ऊँ। (एक कैसेट हमारे पास है उसका नाम क्या है हमको नहीं मालूम,घटा घटा ये रूप ये) । परंतु प्रत्येक आदमी अपना अपना किस्मत लेकर आये है, प्रत्येक आदमी अपना अपना भाग्य लेकर आये है।भाग्यं फलति सर्वत्रं न विद्या न च पौरूषं।भाग्य प्रधान है,भाग्य प्रधान है अगर तुमको ऊपर चढ़ना है-कुवां में तो भाग्य प्रधान रखो,न तुम्हारा विद्या काम के, न दुनिया के विद्या काम के,न धन काम के।इन दोनों से मुख मोड़ना पड़ता है कौन सा?कनक,कामिनी- इन दोनों से दूर होना पड़ता है और मांगना बन्द, मुँह बन्द,बन्द ।जो मिले ठीक, न मिले ठीक है । मरना कबूल हो । ये संकल्प होना चाहिए-मर जायेंगे लेकिन छोड़ेंगे नहीं,तब वो चेला-चेला शिष्य है अन्यथा वो ठग है।ऐसे ठग हजारों हमारे है,हमको कोई नहीं मिले सब धोखा देने वाले मिले,सब धोखा देने वाले मिले,हरि ऊँ,हरि ऊँ।किसी की मत किसी से मिलती नहीं है, किसी की बुद्धि किसी की बुद्धि से मिलती नहीं है । प्रत्येक के प्रारब्ध, प्रत्येक के भाग्य भिन्न भिन्न है, सब भाग्याधीन है ,कर्माधिन है

।सब जीव है,परवश है, क्या करे वो खुद के नहीं है खुद को विश्वास नहीं है, जिसको खुद को विश्वास नहीं है, वो क्या विश्वास करेगा? क्या विश्वास?क्या विश्वास करते हो ?जो मिले सब ठीक है,15 साल से मैंने सब छोड़ दिया हूँ, अब छोड़ा मैंने, आज से और छोड़ दिया, हरि ऊँ,हरि ऊँ।

2 – कबीर का कहना है,पाथर पूजे हरि मिले तो हमसे भी कह जाना । मेरी गलती है । प्रेम गली अति सांकरी जा में दो न समाय, शीश उतारे भुई धरे तब बैठे घर माय । ठठ्ठा नहीं ये मजाक नहीं है, हां जीते जी मरो,फिर वापस आ जाओ तब ऊपर १२ वे केंद्र में आज्ञा चक्र में तब जाकर के जितेंद्रीय होते हो। अन्यथा कपड़ा बदला करो और किताबे लिखा करो, पढ़ा करो, दुनिया को बनाया करो,हमको पागल नहीं बना सकते,पागल को क्या पागल बनाओगे। मैं मानवता को मानता हूँ,मैं सम्प्रदाय को नहीं मानता हूँ,मैं कूप मंडूक नहीं हूँ। मेरे जीवन में मेरे पास में हर सम्प्रदाय के लोग हमारे शिष्य है। जितने सम्प्रदाय दुनिया में है-सब लोग हमारे शिष्य है,काले,गोरे, पीले, नीले, ये सब जितने जात पात है ऊँच नीच,सब हमारे शिष्य है,हरि ऊँ,मैं मानवता को मानता हूँ। यदि मानव मानवता की हद तक रहे तो वो मानव नहीं देव है, इसके विपरीत यदि अपने तक,अपने को देवता समझे तो वो मानव नहीं है,वो नीच है,तुच्छ है, अहा, अहा- वो दानव है, हरि ऊँ।

3 –मैं इतना देख रहा हूँ कि मनुष्य,चर्चा राम की करेंगे,काम करेंगे दाम के लिए,और रात को बगल में लेकर कामिनी के इच्छा और अपनी इच्छा के कारण करेंगे और अपना सारा जीवन ये तीन विषय में-१– लेक्चर बाजी,२– शरीर को बेचना रोटी के लिए,३– और जिसको ऊपर चढ़ाना है उसे कुवां में और पानी

भरना है,रात को कुवे में पानी भरना है, रात भर। ये तीन में आज तक अधिकतर पाया हूँ मैं। अभी तक कोई आत्माराम का अनुभव वाला व्यक्ति नहीं मिला। इसलिए जो चर्चा करता है,शास्त्र में लिखा है शास्त्रार्थ रूढ़ि बलियसि,शास्त्रों में भी रूढ़ि बलवान है।तुलसीदास जी भी मान गये योगी तुलसीदास जी-कि जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।ये तुलसीदास जी है अपने राम चरित्र मानस में दिया है। तो मैं किसी को मना नहीं करता हूँ,आप जरूर करिये।हाँ रूढ़ि बलवान है।अब मैं मना किसी को नहीं करता हूँ।आपकी भावना,जैसी भावना है वैसी फल आपको मिलेगा,मुझको नहीं।आप रोटी खायेंगे तो आपका पेट भरेगा,मेरा नहीं।मैं नास्तिक हूँ,मैं हजारों माइल चलकर आया हूँ,और वही तुलसीदास के चौपाई के आधार कि का कहूँ, कि हितके बक ही मराला मज्जन भर देखि तत्काला। तो हमको मिला हम आये १९१९ में और केवल तेरह तारीख स्नान करने गये,बोट एक घण्टा के लिए कर दिये-त्रिवेणी संगम में गए, (किला के पास) खूब पानी में उतरे और खूब नहाये-कि कौवा हूँ मैं कोयल बन जाऊंगा,मैं बगुला हूँ, मैं हंस बन जाऊंगा। लेकिन कुछ हुआ नहीं घंटे से ज्यादा हो गया। पिता ने खेंच के निकाला हमको बोट से और दो चार चपत जमा दिया, हाँ बस हम कोयल बन गये और हंस बन गये। वो दिन से मैंने हाथ जोड़ लिया,हाथ जोड़ लिया।मैं तीर्थ क्षेत्र नहीं जानता हूँ।

4 – मैं पत्थर की पूजा नहीं करता हूँ, मैं लकड़ी की पूजा नहीं करता हूँ,मैं साँप बिच्छू की पूजा नहीं करता हूँ। मैं दुनिया भर के व्रत उपवास किया हूँ, मैं पूजा पाठ किया हूँ, रसोई बनाया हूँ, बर्तन मांजा हूँ, पानी भरा हूँ, मैं बोझा ढोया हूँ।मैं सब काम किया हूँ, दुनिया में जितने काम है सब किया-लेकिन भीख नहीं मांगा, मरना

कबूल लेकिन भीख नहीं माँगा।लोगों को फेंके हुए बाजार के , पत्ते घास,जो गाजर है मूली है ये सब,ये खाता था।मैं मांगता नहीं था,नहीं।..पता लगा लो-झूठा मिले तो चार चप्पल जमा दो, हरि ॐ।तो भैय्या जिसकी भावना जैसी है" आप अपना करो, करने में मना नहीं करता,मैं कोई अधिकारी नहीं हूँ, हरि ॐ। तुलसीदासजी ने अपने रामचरित मानस में लिखा है - गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन,नयन अमिय दृग दोष विभंजन। तब तक तुम्हारे वो जो तीसरी आँख है,उस का पर्दा,ढल नहीं सकता,डोल नहीं सकता,और टूट नहीं सकता।नयन अमिय-अमिय नाम,मोक्ष का है तब तक वो,उसको मोक्ष नहीं होता है। जब तक,वो जो पलक है वो जो अनेक जन्मों के करोड़ों जन्मों के संचित जो संस्कार तुम्हारे है जब तक वो विनाश नहीं हो जाता है तब तक तुम्हें इस, शरीर से, आवागमन से, जन्म मरण से छुटकारा कभी भी नहीं मिल सकता (स्वप्न में भी), सोचना नहीं।तो नयन अमिय दृग दोष,ये दृग दोष है - विभंजन। जब वो घुस जाती है - तब जाकरके उसका गुण धर्म शरीर में प्रकाशित और विकसित हो जाती है, मृत्यु के ।उसी प्रकार से गुरुजी में, सत् वाक्य, कर्म वाक्य, आत्म में घुस जाय और लग जाय तब जाकर के बस उसके सिवाय कुछ नहीं। अपना मृत्यु का आलिंगन करना होगा कोई लिखता नहीं कोई बोलता नहीं,अनुभव के बोल है, मैं बोलता हूँ, तब मृत्यु होती है,और मृत्यु के बाद मृत्यु के समय में ये/विनाश होता है वही केंद्र है, तीसरा, दूसरा केंद्र है ही नहीं है। वही केंद्र जो है विधाती कर्मों का विनाश संपूर्ण हो जाता है तब ऊपर जाता है १२वें में। तब जाकरके और तीसरी आँख खुल जाती है,ये सेकडों दफा,नीचे से ऊपर तक के,तब उसका ज्ञान,तब उसका ज्ञान हो जाता है,आत्म ज्ञान होता है।आत्मा ही ज्ञान है,ज्ञान

ही आत्मा।इसमें जो भेद समझता है वो मुर्ख है,और मुर्ख है। वो कुछ नहीं जानता किताबी पंडित होगा,होगा कैसे? हरि ऊँ होगा, अनुभवशून्य, अभाव है।भाव माने बढ़ता है, हरि ऊँ, हरि ऊँ।

5 – इसी तरह लेते हुये,ये संसार तुम्हारे ख्याल से,पीछे हो गये - नहीं नहीं। एक जर्नलिस्ट जिसका नाम है,पालब्रंटन,उसने अनुभव किया और बोल रहा है, क्या बोल रहा है- इफ दिस यूनिवर्स हेड नाट् बीन फार्मड आउट ऑफ डिवाइन ऐसेंस नन ऑफ दि क्रियेसन विदिन इट कुड होप ट्रुली कम इनटू डिवाइन स्टेट-ये पाल ब्रंटन का अनुभव है। ये सब जानते है,ऐसा तुम देख लो,हमारे संतों का कहना है-दिस बाडी विल फिनिस् व्हाट एवर सेक्रिफ़ाइस् यू मे डू,यू हैव टू वर्क हार्ड फार साल्वेसन, यू डू फार ही, एस यू थिंक।हरि ऊँ, हरि ऊँ।ये लड्डू नहीं है, रसगुल्ला नहीं है, हमको मत सिखाओ, हौ रे, हमी मिले तुमको। प्रेमगली अतिसाकरी जा में दो न समाय, शीश उतारे भुई धरे तब बैठे घर माय।ये शीश उतारे, शीश उतारे, शीश उतरे,दे जाय-ये क्या है?

6 – हमको तो आज तक भारत में एक भी आदमी नहीं मिले, वेषधारी बहुत मिले,हमको माफ करना। ठग मिले,हमको ठग। मैं चार बार अपना मृत्यु देखा,पांचवा बार कोल्पस् और फिर से वापस आ गया। चार दिन, तीन दिन,पांच दिन, सात दिन, एक दिन, मृतवत, मुर्दे की तरह बच्चा जैसे सोता है, वैसे पड़ा रहा, कुत्ते नहीं पूछते। अष्ट्सिद्धि मुझे प्राप्त है मैं प्रयोग कर लिया और सब छोड़ दिया,अहंकार, मैंने किया।मेरी दृष्टिकोण से-ये लोग बदनामी करते है,कनक कांता, कनक कांता, पैसा औरऔरत, ऐसा जो

,घृणा घृणा दृष्टि से,हमको ये जँचता नहीं है। मैं तू-मेरे दृष्टिकोण से हमारे दृष्टिकोण से, मैं और तू,ये न रहे।

खुद को ऐसा मिटा की तू न रहे, तेरी हस्ती की रंगों बूँ न रहे।

रहे। अरे स्वयं को ऐसा अभ्यास करो, न तू रहे और न मैं। मैं और तू ये दोनों न रहे, तुमको सुधि बुधि न रहे, होने दो, भागना चाहते हो तो दशो दिशा से भागो, इतना भागो कि दशो दिशा न रहे, तुम्हें बोध न रहे। तो मेरी दृष्टिकोण से ये मैं और तू ये दो नहीं समाती या तो मैं और तू बराबर है, या तो मैं और तू को खो बैठो- अभ्यास करना माने इसको खोना है,मैं और तू दोनो को, इतना अभ्यास होना। मृत्यु को आलिंगन करना है और उसके परे जाना है। मैंने किया हूँ, रु रु अ बस,बस हो गया,लग गया, गिर गया। एक दिन, तीन दिन,पांच दिन, सात दिन, पड़ा रहा। न किसी की निंदा, न किसी की स्तुति। मैं और तू, ये भूल जाना है हमको, जीते जी मर पहले, मामूली बात नहीं। वेशांतर होकरके और बाबाजी बनकर के हम भगवान है हमारी पूजा करो। और हमारे मुँह से अप शब्द भी नहीं मिले, बस हो गया। खाली हमको आदर सत्कार करना है। मैं पानी नहीं देता हूँ,इन दोनों को पानी नहीं देता पूंछता नहीं हूँ, हरि ॐ तत्सत्। मुझको माफ़ करना । तब वो औदार्य कहते है।

6 –चरित्र, औदार्य पूर्ण हो गया,तब वो उदार है, तब वो श्रेष्ठ है। सेठ माने श्रेष्ठ है, न की पैसा हो गया की श्रेष्ठ है, वो दुनिया के लिए वो श्रेष्ठ होंगे, लेकिन वो निक्कमा है, किसी काम के नहीँ। अयम् निजःपरो वेत्ति गणना लघु चेतसाम्, औदार्य चारितानां तू वसुधैव कुटुंबकम। सारा वसुधा मेरा कुटुंब है, जब ऐसी दृष्टि हो जाय,तब औदार्य हो गया, तब मैं तू ये दोनों, बिना मृत्यु केंद्र पार किये

बिना,आलिंगन किये बिना कई बार, एक बार नही कई बार, होने से तब जाकर के औदार्य पूर्ण होत। है।

।।श्री गुरूजी।।

1–तपस्या करते है तो इन्द्रिय का भय है, इन्द्रियों का भय है वो खत्म हो गया। सिनेमा दर्शन जाएंगे, लेकिन गुरु दर्शन नहीं, खाली गुरु नहीं सद्गुरु दर्शन नहीं, दरस बरस भंजन और पाना। ज्ञान रूपी गंगा जो बह रही है आत्मा रूपी सागर जहाँ जाना है। मन्दिर जाते है पत्थर के दर्शन करने,सोचते है किवाड़ बन्द हो जाएगा, मगर ये दर्शन नहीं है ।

2 – दर्शन तो ये (सतगुरुजी) है जहां तरण तारण और मरण मारन है। काल का भय है सभी बोलते है, लेकिन बचने का कोई उपाय नहीं है,भय दुनिया की है,लेकिन दुनिया को तो आप प्रसन्न नहीं कर सकते। जैसे आप स्वयं अप्रसन्न है वैसे सब अपने आप में अप्रसन्न है, आप किसी को प्लीस नहीं कर सकते हां कुछ समय के लिए एकमत हो सकते है, थोड़े देर एक हो सकते है,वो एकमत को भी नहीं मानेंगे। कुछ देर के लिये हो सकता है सामाजिक कार्य करना है, तो मिल करके सामाजिक कार्य करें,कार्य हो गया आप फिर से पृथक हो गए, इसका मतलब,यही-कि तुम्हारा हमारा मत हरदम एक नहीं है। ये काया भी काल के गाल में प्रत्येक सेकेंड जा रही है,ये शरीर हमारी, मां बाप कहते है बेटा बड़ा होता है लेकिन ये नहीं जानते एक एक सेकंड काल के गाल में जा रहा है, और वो कब मुँह बन्द करेगा ये कोई नहीं जानता। यहां ज्योतिष जो है कर्नाटक वाले भीमा शंकर शास्त्री सब फेल्वर,इंदिरागांधी के

बारे में बड़े बड़े तांत्रिक बड़े बड़े ज्योतिषी सब फेल्वर तो तात्पर्य यह है छोटे का नाम क्या लेना बड़े का नाम लेना सारे जो है पीछे पीछे ऐसा भाग्य तुम्हारा ऐसा भाग्य तुम्हारा ऐसा हो गया।इस प्रकार से जीवन हमारा निर्रथक जीवन में जो चरित्र है जब तक वो रास्ता(सुषुम्ना) खुलता नहीं तब तक वो सब निर्रथक है।आधा से ज्यादा सोने में गया और आधा में आप अर्थ में गया आधे में आधे जो है तरुणाई में गई भोग में गया,और आधे आधे द्वादशांस जो है रोग में गया, ऐसा करते करते दिन बदिन हम चले जा रहे है इत्थम जन्म निर्थकम। ऐसा जन्म लेने का ये जन्म हमारा निर्रथक हो गया।

3 –सार्थक कब होगा? विष्णु मार्ग में-विष्णु जो है वो पद प्राप्त करने पर सार्थक हुआ,भय रह ही नही जायेगा, विष्णु माने क्या विष्णु मार्ग माने सुषुम्ना इसमें घुसने के बाद विष जो धातु है,अनु प्रत्यय क हलन्त बनने के बाद दोनों के संयोग से विष्णु बन गया, विष्णु माने व्यापक।अभी आप संकुचित है इतने संकुचित है,पत्नी से संकुचित है ही, अपने आप में भी संकुचित है,सब जगह से संकुचित तो है लेकिन अपने आप में भी संकुचित है। आप सही बात बोल ही नहीं सकते इतने संकुचित है, क्योंकि ये सब मर्यादा मान ये जिसमें हमारी रहने की जरूरत है इसमें हमारा मान दिन रात भय है भय है,तो विष्णु मार्ग की जरूरत है विश माने व्यापक,जो है जैसे जैसे आप अंदर घुसते जायेंगे,मन और बुद्धि चित,मन और बुद्धि ये व्यापक होते जायेंगे।

4– इस शरीर से अपने प्राणों के प्राण जो है,अभी आप बैठे है उतने जमीन आपने व्याप्त किया,लेकिन ध्यान में जब बैठेंगे तो ज्योति जहां तक फैलती है वहां तक आप

व्याप्त होते जाते है,ये व्यापक सिद्ध है। अभ्यास करते करते एक दिन ऐसा आता है सम्पूर्ण ब्रम्हांड में आप फैल जाते है।वो जो हमारी बुद्धि है पसरते पसरते वो जो आत्म ज्योति है फैलती है पसरती है उस आत्मा के साथ आपमें भी बुद्धि और मन फैलता है,बुद्धि धारण करता है और मन फैलती है। ऐसा हमारा मन फैलता जाता है आत्मा के साथ में।ये लाभ होता है,आत्मानुसंधान से ।

5– रामदास ने यही कहा है- **स्वस्वरूपानुसन्धान हेचि भक्ति हेचि ज्ञान ।।** इसी को भक्ति कहा है। ये वेदान्त है या नहीं बताइये,माने एम.ए होने से पी,एच,डी होने से होता नहीं। कबीर दास बोलते है काशी में विद्वान लोग के पास जो है अरे बोले तू कहत है कागज की लेखी हम कहत है आँखन देखी।तुम लोग कागज को पढ़कर बोलते हो, हम तो आंख की देखी ,याने दिव्य नेत्र का दर्शन कितना अंतर है। तो आंखे देखी यही सत्य होता है।तो तात्पर्य है आँखन देखी,विष्णुम पद निर्भयम,अंदर जाओ देखो अपने आप को पवित्र करो। दर्शन करो और अपने शरीर मन आदि को पवित्र करो।पवित्रीकरण-उपकरण नहीं है ।

6– योग के सिवाय और कोई दूसरा उपाय नहीं है अपने को शुद्ध करने में। इस तरह से गीता में कृष्ण ने कहा –

राजविद्या राजगुह्यं पवितत्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ।।

इस विद्या के ग्रहण करने से वो प्योरिफायर है,पवित्र कर देते है, ये पवित्र हो जाते है आपको ये प्योर कर देती है, खाली इच्छा कामना वासना जो है, ये राग द्वेष जो

है, ये जो ममता है, ये सब शुद्ध हो जाते है और आप शुद्ध होकर के कुल में भी आदर्श हो जाते है,समाज में भी आदर्श हो जाते है। साधना करके ये ऐसे लोग है, जहां अरबों रुपए खर्चा करके वैज्ञानिक लोग प्रमेय को लेकर भीतर नहीं पहुंच पा रहे है।

7 - लोगो की ऐसी भावना बनी हुई है कि ईश्वर कृपा करें तब होता है, मेरी भावना एक ही है मेरा मानना है जो ये है। धीरे धीरे हम लोग भोग विलास में पशु बन गये, राग द्वेष इसमें जो है पशु बन गए। यही एक मार्ग है जीरो मार्ग बोलते है इसको। ये सारा आयु जो है काल जो है। एक बार दर्शन तो हो जाय कल्याण हो जाय। लेकिन विश्वास भरोसा श्रद्धा हमारा नहीं है। ये मार्ग में चलने पर धीरे धीरे व्यापकता जो है सर्व व्यापकता हो जाती है। बुरा जो ढूंढा आपनो मुझसे बुरा न कोई। एक सेकंड भी फ्लेश होता है तो कल्याण है। कल्याण निर्मल होना है। अखण्ड मण्डलाकारम। सत माने आत्मा,आत्मानुभूति खाली फ्लेश मारने जैसा हो जाय। अपना कल्याण के लिए। लौ मात्र जो है कल्याण हुआ है। सब सोचते तो है सोचने से क्या है?

8 - हमारे योग के विषय में लोगों की ऐसी धारणा बनी हुई है, कि ईश्वर कृपा करे तब होता है। और मेरी भावना ऐसी है, मेरा भावना है तुम्हारा कुछ नहीं सकता मिस्टर ,ये जो भूमिका, भावना हमारी बन गई। इससे क्या होता है कि हम फिर भोग विलास में, आकरके पशु बन गये। मनुष्य के रूप में पशु केवल रह गये। ,राग द्वेष और काम क्रोध मद लोभ मान मत्सर आदि जो है बस इसके हम पुतला बन गये।

9 - विष्णु पदं निर्भयं। विष्णु पद जो है माने आत्मपद् जो है - इस मार्ग में घुसकरके इस रास्ता, हाई वे जो जीरो है, पूर्ण जो है, उस पूर्ण जो मार्ग पूर्णता की ओर ले जाने वाली मार्ग, उसको जो अगर आप पहुँच जायेंगे तो एवरी रूट क्या, रीच टू ऐनी रूट, रीच टू रूम। ये बोला गया है। ,जितने मार्ग जो है इस रूम को पहुँचते है रूम जो बना है एक दिन में नहीं बना। इसी जन्म में नहीं बना अनेक जन्म में बना है। और ये एक मार्ग है जीरो मार्ग बोलते है जो। माने पूरा जो है रास्ता जो ले जाती है,ये ऐसा ले जायेंगे आपको।

10 - ये इस तरह व्यापक होते जायेंगे आप, जाते जाते भी आप व्यापक, व्यापकता आपमें आती जायँगी। जहाँ जहाँ जायेंगे, सब सम्मान करेंगे और अपने हृदय में स्थान देंगे।और प्रतिक्षा भी करेंगे हमारे यहाँ आये।

तात्पर्य ये है इत्थम जन्म निर्थकम्। जब तक उस पद पर नहीं पहुँच सकते विष्णु पद जो है,तब तक तो हमारा भय दूर होता नहीं है। चोरी हो गई,यहाँ से वहाँ तक सब लोहे के दरवाजे है।

इस प्रकार से ये चोर जो है न आयु, काल रूपी चोर है।वो हमारे पीछे पड़ा हुआ है, न जानते हुए न समझते हुए अपने आपको उसी तरह गर्त में हम जा रहे है ये अर्थ समझ में आ गया आपको। जहाँ से अच्छी चीज मिलती है वहाँ पहुँचने की, पहुँच के वहाँ से ले लेंगे, हमें मना नहीं करते, लेकिन अच्छी चीज है बट रही है आपको मालूम है यहाँ से हमारा कल्याण हो रहा है। तो मार्ग में चलो भोग भोगते हुए कम से कम एक बार दर्शन तो हो जाय। एक बार दर्शन से कल्याण हो जाता है।

11 - ये सतपुरुष, सद्गुरु, और भगवान ये ईश्वर कहते है ,राम,कृष्ण आदि,एक बार भी दर्शन हो गया आपका कल्याण हो गया।ये समझ नहीं, सतपुरुष,सद्गुरु जिसको ब्रम्ह कहा ये सब एक है। लेकिन ये हमारा विश्वास, भरोसा और श्रद्धा नहीं है। कुछ भी नहीं है। है, नहीं है, ऐसा नहीं है, ये तो खाली टाइम बीइंग है। रात हुई कमरा खाली करके जाना ही है, ऐसा सतगुरु सत्पुरुष जो है दिन भर में एक बार दर्शन करना ही है।

12 -,उसकी व्यापकता जो है धीरे धीरे सर्वव्यापी होते चला जाता है, खाली अभी जो मैं क्या कहते है उसको।हरेक आदमी सेंटर में होना, खाली जग गई सेंटर में आ गई वो सुषुम्ना।ये चीज जो मिल रही है,कहीं नहीं है। बुरा जो खोजन मैं चला बुरा ना पाया कोई,जो दिल खोजा अपने तो मुझसे बुरा ना कोय।कहने का तात्पर्य यह है इत्थम् जन्म निर्थकम्,ठीक है। विष्णु परम धाम जो है,जिसकी सुषुम्ना खुली है, आत्मा के पथ में आते जाते है, आत्मज्योति की दर्शन होते चली जाती है,एक सेकण्ड भी होता है कल्याण होते चले जाता है, एक सेकण्ड भी इधर से उधर आते जाय तो भी आपका कल्याण होते जाता है।

13 - गुरुजी का आदेश का पालन करके उनका जो है कल्याण होते जाता है।कल्याण माने निर्मल हो गया।

ब्रह्मनन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।

द्वंद्वातीतं गगन सदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम् ।।

एकं निन्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतम् ।

भावातीतं त्रिगुणरहितम् सद्गुरूं तं नमामि ।।

अखंड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरं ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

उसका काम होता चला जायेगा। लौ मात्र इतना भी दर्शन हो जाय तो कल्याण हो जाता है। ये कितना सस्ता धन है, कितना सस्ता खेल है लेकिन। आपको बिलिव ही नहीं। सत्कर्म, सत् माने आत्मा। माने आत्मानुभूति पलक मात्र जितना दर्शन हो जा, सारा विश्व जो है. ..। अपने कल्याण के लिए तुम्हें समय नहीं है। इतना कहना पर्याप्त है। **गुरू जी के प्रवचन** कैसेट से सुनकर लिखा गया है, त्रुटियाँ संभावित है, क्षमा, प्रणाम।

।। श्रीगुरुजी।।

"श्री योगेश शर्मा जी द्वारा प्रदत्त पू0 गुरूजी के वार्तालाप के कुछ अंश "

1, समस्त मानसिक व शारीरिक रोगों से मुक्ति का एक मात्र सही व स्थाई उपाय है

ध्यान के अभ्यास से आत्म योग द्वारा अपना आत्मबल, रोग-प्रतिरोधक क्षमता [immunity Power ,.को बढाना |आत्म बल , रोग – प्रतिरोधक क्षमता को कैसे बढ़ाए, इसके लिए पातंजल मुनि रचित अष्टांग योग को व्यवहार में लाना होगा -इसमे विशेषकर ब्रह्मचर्य को समझना होगा , आचरण में लाना होगा !मुक्ति का रहस्य यही है | फिर यह शरीर दिव्य होगा , न कोई रोग न इन्फेक्शन , बिना इत्र के खुशबू होगी ।

हम ज्ञान -सामर्थ -रूप में पूर्ण समर्थ होंगे, यह रूप पूर्ण ईश्वर का ही होगा |

..ब्रह्मचर्य - मन -बुद्धि को * चेतना-ब्रह्म [अंतरात्मा] में स्थिर करना |

ब्रह्मणी चरति इति ब्रह्मचारी! जिनका मन[बुद्धि] एक ब्रह्म में चरित हो,सम्पूर्ण चराचर में शरीर [देह] दर्शन नही , शरीर [देह] को धारण करने वाला तत्व [ब्रह्म] दर्शन हो वो तब ब्रह्मचर्य है | इससे शरीर का भी ब्रम्हचर्य सिद्ध होता है ! ब्रह्मचर्य को विस्तार से समझने के लिए पातंजल योग प्रदीपिका के अष्टांग योग में यम के अंतर्गत ब्रह्मचर्य का विस्तार से वर्णन है , उसका अध्धयन करे ! सभी मानसिक व शारीरिक रोगों के मूल सका अध्धयन करे ! सभी मानसिक व शारीरिक रोगों के मूल ही अब्रह्मचर्य /असंयम ही है |मानसिक व शारीरिक स्वस्थता -समर्थता के लिए भारत को विश्व गुरु के रूप में पुन: प्रतिस्थापित करने के लिए - आत्म-योग के लिए

ध्यान का अभ्यास से ये आचरण में लाये ।

अष्टांग योग - योग के आठ अंग! महर्षि पतंजलि ने योग को योगश्चित्त वृत्ति निरोधः

-चित्त की वृत्तियों के निरोध व ध्यानं निर्विषयं मनः -.ध्यान से मन निर्विषय -निर्विकार होता है |

के रूप में परिभाषित किया है। योगसूत्र में उन्होंने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक,

मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आठ अंगों वाले योग का एक मार्ग विस्तार से बताया है। यह आठ आयामों वाला मार्ग है जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। योग के ये आठ अंग हैं:

१. यम :-

;क) अहिंसा - शब्दों से, विचारों से और कर्मों से किसी को हानि नहीं पहुँचाना |

;ख) सत्य - विचारों में सत्यता, परम-सत्य में स्थित रहना |

;ग) अस्तेय - चोर-प्रवृति का न होना |

;घ) ब्रह्मचर्य -मन -बुद्धि को * चेतना-ब्रह्म [अंतरात्मा] में स्थिर करना |

ब्रह्मणी चरति इति ब्रह्मचारी |

जिनका मन[बुद्धि]एक ब्रह्म में चरित होएसम्पूर्ण चराचर में शरीर [देह] दर्शन नही, शरीर [देह] को धारण करने वाला तत्व [ब्रह्म] दर्शन हो वो तब ब्रह्मचर्य है | इससे शरीर का भी ब्रम्हचर्य सिद्ध होता है [ब्रह्मचर्य को विस्तार से समझने के लिए पातंजल योग प्रदीपिका में देखे

;च) अपरिग्रह - आवश्यकता से अधिक संचय नहीं करना और दूसरों की वस्तुओं की इच्छा नहीं करना

२. नियम: पाँच व्यक्तिगत नैतिकता

;क) शौच - शरीर और मन की शुद्धि

;ख) संतोष - संतुष्ट और प्रसन्न रहना

;ग) तप - स्वयं से अनुशासित रहना

;घ) स्वाध्याय - आत्मचिंतन करना

;च) ईश्वर-प्रणिधान - ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, पूर्ण श्रद्धा

३. आसन: योगासनों द्वारा शारीरिक नियंत्रण

४. प्राणायाम: श्वास-लेने सम्बन्धी खास तकनीकों द्वारा प्राण पर नियंत्रण

५. प्रत्याहार: इन्द्रियों को अंतर्मुखी करनाए इन्द्रियों का अपने वश में होना

६. धारणा: एकाग्रचित्त होना [मन में सर्वत्र -घट -घट में विराज मान ब्रह्म जो सबसे निकट आत्म रूप में हमारे भीतर विराजमान एक ब्रह्म को धारण करना]

७. ध्यान: निरंतर ध्यान

८. समाधि: आत्मा से जुड़ना, शब्दों से परे परम-चैतन्य की अवस्था,धी नाम बुद्धि का आत्मा में समाहित हो जाना , बुध्धि को आत्मा से समाधान प्राप्त होना |

योग अर्थात बुध्धि का आत्मयोग [आत्मा में समाहित होना ,मिलना ,बुद्धी को आत्मा [अंतरात्मा] से समाधान प्राप्त होना ही समाधि है ,योग है |इस स्थिति में मन सहित इंद्रिय अपने वश में होता है,व बुध्धि आत्मा के समाधान [निर्देशन] से कार्य करती है | जिससे यम , नियम योग प्राणायाम, प्रत्याहार | ये सब सहज व्यवहार [आचरण] में आ

जाता है | इसीलिए पूर्ण ज्ञानी सद्गुरु ,साधक को यम -नियम-आसन-प्राणायाम से पहले सीधा प्रत्याहार -धारणा- ध्यान से समाधि [आत्मयोग] कराते है | इसी को एक ही साधे सब सधै कहा गया है ।

एक समय श्री सद्गुरुजी बताये थे - एक संत थे , उनके नाती उनसे कहते है कि बाबा मै अब बड़ा हो गया हूँ , संसार में कुछ करना चाहता हूँ |इस पर संत ,नाती से कहते है - ना तू पहले अपने आप को जान फिर उतर मैदान |यहाँ संकेत है - ना -तू = जो तू अपने को समझता है तू वो नही है ,अत: पहले अपने को जान अर्थात आत्म ज्ञान प्राप्त कर उसके बाद काम का होगा तब तुझमे यथार्थ समझ ,सामर्थ -शक्ति होगी , मन निर्मल -निर्विकार , निष्काम होगा तब अपना व संसार के हित में कुछ कर पायेगा | ज्ञानयोग [सांख्ययोग] ,कर्मयोग , भक्तियोग [प्रेमयोग] -सब पर्यायवाची है |सब का एक वाक्य आत्म-योग है |आत्म-योग होने पर सब स्वमेव सिद्ध हो जाता है |आत्म-योग=मन [बुद्धि] का अंतरात्मा से योग ,यही समाधि है | धी =बुध्धि आत्मा में समाहित हो जाय तब समाधि है ! बुद्धि आत्मा से समाधान प्राप्त कर कार्य करे,फ़िर हर कार्य -व्यवहार सर्वोत्तम | इसे ही एक ही साधे सब सधै कहा गया है |

सनातन दर्शन में - ' प्रेम '

सबमे एक परमात्मा को तत्व रूप में विराजमान देखता है,सब भूतो को अपने विभिन्न अंगो की तरह देखता है वही यथार्थ देखता है |सीया राम-मय सब जग जानी | हर रूप में ईश्वर दर्शन यही ज्ञान -भक्ति - प्रेम -योग है |आत्मवत सर्वभूतेषु ,यही

यथार्थ दर्शन है , love is god है व यही प्रेम है |

व्यवहार में भिन्नता जैसा संसार में प्रचलित है वैसा हो सकता है, जैसे माता -पिता , मित्र , गुरु-शिष्य ,बहिन -भाई, पति-पत्नी, मालिक -सेवक , आदि-आदि के साथ जैसा संसार में मर्यादित है वैसा व्यवहार भिन्न हो सकता है, पर आंतरिक भाव सबके साथ एक आत्म - वत होता है और ये आत्मज्ञान हुवे बिना नही हो सकता ! आत्म ज्ञान प्राप्ति से पहले कोई स्वयं का नही होता किसी का क्या होगा |

प्रायः कुछ घटनावो में कहते है कि फलां व्यक्ति प्रेम में अन्धा होकर कुछ अनिष्ट कर लिया , ये प्रेम नहीं काम है, मोह है, इसीलिए सुना होगा असफल होने पर कई विवेक खो देते है, आत्महत्या . हत्या तक कर देते है व तेजाब आदि डाल कर नुकसान पहुचाते है |

लोग कहते है प्रेम अँधा होता है, ऐसा नहीं है प्रेम अँधा नहीं काम अन्धा होता है |

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

भावार्थ : विषयों का चिन्तन करने वाले की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

भावार्थ : क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है, मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है, बुद्धि का नाश हो जाने से वह अपनी स्थिति से गिर जाता है, विक्षिप्त ,पागल हो जाता है , फिर वह कामांध -हत्या , आत्म-हत्या , बलात कुछ भी अहित कर सकता है |

वास्तव में प्रेम -ज्ञान है ,विवेक है ,वैराग्य है ,त्याग ,समर्पण है, शरणागति ,निःस्वार्थता है , भक्ति है , मिलन-योग है ,आनंद है | इसमे किसी का अहित नही होता ! इसे ही **love is god** कहा गया है ! मेरा -तेरा का भेद समाप्त हो जाता है | आत्मज्ञान हुवे बिना भेद समाप्त नहीं होता | और जब तक मै और तू है तब तक ए समझिये ज्ञान [प्रेम] से बहुत दूर है , तब तक विरह ,व्याकुलता ,भय ,संशय है ! भेद समाप्त अर्थात ज्ञान होने पर आनंद है ,शांति है , फिर सर्वत्र मै ही मै हूँ | फिर सम्पुर्ण चराचर , सभी भूतो को अपने विभीन्न अंगो की तरह देखता है , सब आत्म- वत हो जाता है ! वास्तव में ज्ञान होने पर ही हृदय में प्रेम उत्पन्न होता है | अन्यथा- स्वारथ लागय करय सब प्रीति ,सुर नर मुनी सबके यही रीति ---एक गाना है –

मतलब निकल गया तो पहचानते नही सामने से गुजर जाते है जैसे जानते नही --

वास्तविक प्रेम में भेद ही समाप्त हो जाता है --उर्दु के शायर इकबाल साहब ने कहा है –

ये नक्श खयाली है , काबा हो के बुत खाना , मै तुझमे हूँ , तू मुझमे है ये जल्वये जाना |
जब सर को झुकाता हूँ, शीशा नजर आता है |शाकी से मै कह दूंगा ये राज फ़कीराना

-- अहम् ब्रम्हास्मि |अर्ताथि मै ब्रम्ह [ईश्वर] हूँ ! ज्ञान सही है पर अधुरा है , ऐसा तो रावण , हिरणकश्यपु भी कहे है | केवल मुझमे या तुझमे ईश्वर -ब्रम्ह-रब दीखना अहंकार है ,मोह है ,स्वार्थ है ,काम है ! जिस दिन अपने सहित सबमे ईश्वर [ब्रम्ह] अर्थात सर्वम ब्रम्ह "सर्वं खल्विदं ब्रह्म का बोध हो जाय, तब ज्ञान पूर्ण होगा | जिस दिन सब में रब दिखने लगे तब ज्ञान पूर्ण होगा , तब वह मौन होगा , शांत होगा संशय रहित आनंदित होगा |यही प्रेम-ज्ञान-भक्ति है ,योग है-

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग

तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग।

यदि तराजू के एक पलड़े पर पृथ्वी -स्वर्ग के सभी सुखों को रखा जाये तब भी वह एक क्षण के सतसंग से मिलने बाले आनंद के बराबर नहीं हो सकता।

सतसंग

सत=आत्मा अर्थात आत्मा [अंतरात्मा] का संग ,मन -बुध्दी का आत्म योग होना , बुध्धि आत्मा [अंतरात्मा] में समाहित हो जाना -यही समाधी है , ऐसा क्षण मात्र के लिए भी हो जाय तो इसकी तुलना पृथ्वी -स्वर्ग आदि के समस्त सुखो से भी नही हो सकता -- गुरु कुम्हार ,शिष्य कुम्भ है गढ़ -गढ़ काढ़े खोट भीतर हाँथ सहार दे बाहर मारे चोट |[कभी बाहर हाँथ सहार दे भीतर मारे चोट] कहते है -बिते बिना समझ नही आती |अर्थात साधक के जीवन में बहुत से घटनाये अनुभव [समझाने] के लिए होता है | हर प्रकार का अहंकार -तन बल ,धन बल ,जन बल ,बुद्धि बल सब टूटता =समाप्त होता है , फ़िर वास्तविक में जो बल है ,जिससे सब बल है ,जिससे हमारा अस्तित्व है - रामबल [आत्माराम] उसका बोध होता है.फ़िर हरि है मै नाहि एक ही साधे सब सधै |

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामि न पुनर्भवाय।।

कृष्ण को एक प्रणाम [स्मरण]करने की तुलना दश अश्वमेध यज्ञ करने से भी नही हो सकती |

दश अश्वमेध यज्ञ करने वाले का पुनर्जन्म होता है पर कृष्ण को प्रणाम [स्मरण] करने वाले का पुनर्जन्म नही होता है ,वह मुक्त-पूर्ण हो जाता है |

कृष्ण नाम आत्मा [परमात्मा] का नाम है ! वो कृष धातु और अन प्रत्यय से बना है [कृष +अन] कौन कृष्ण ? कृष जिसका ष हलन्त है | कृष =कर्ष =आकर्षण Attraction जिसने सबको आकर्षित किया है धारण किया है | अर्थात जो समपुर्ण संसार को आकर्षित किया है, धारण किया है उस आत्मा [परमात्मा] का नाम कृष्ण है ! जो सबमे व्याप्त है .ऐसी धारणा के साथ अपने भीतर विराजमान आत्मा [परमात्मा, अंतरात्मा] को भजेंगे तब बुध्धी का आत्म योग होगा ! अर्थात परमात्मा को प्राप्त करेंगे ,योग भीतर होता है ,उनको प्राप्त करना मायने वही हो जाना है |बाहर भी वही है पर द्वैत भाव से भजेंगे तो आपकी संकल्प , कामनाए पूर्ण होगी लेकिन आप उन्हें [परमात्मा] को नहीं प्राप्त करेंगे , क्यों की बुध्धी का आत्म योग भीतर ध्यान योग अभ्यास से होता है ,ऐसा भजना ही सही है | यदि द्वैत भाव से बाहर भजेंगे तो योग नहीं होता ,आत्म -योग के लिए ऐसा भजना अविधी पूर्वक है . जितने मंदिर , देवालय आदि है ,वे सब स्मारक अर्थात लक्ष्य का स्मरण दिलाने वाला है |कारक-सर्वत्र कण -कण में सम्पूर्ण चराचर में व सबसे निकट हमारे भीतर विराज मान है,हम इनके हे चेतना से चैतन्य ,प्रकाशित है |जो सबमे शक्ति के रूप में व्याप्त है वही सदगुरु है .ऐसी धारणा के साथ अपने भीतर विराजमान आत्मा [परमात्मा] को भजेंगे तब बुध्धी का आत्म -योग होगा . अर्थात परमात्मा को प्राप्त करेंगे परमात्मा को प्राप्त करना मायने वही हो जाना है |

योग भीतर होता है | बाहर भी वही है पर द्वैत भाव से भजेंगे तो संकल्प , कामनाए पूर्ण होगी लेकिन उन्हें [परमात्मा] को नहीं प्राप्त करेंगे क्यों की बुध्धी का आत्म योग भीतर ध्यान योग अभ्यास से होता है . ऐसा भजना ही सही है |हमें उनके=अपने अर्थात अपने अंतरात्मा के शरण में जाना है !आध्यात्म -आत्मज्ञान और विज्ञान अलग-अलग नही है |

आत्मज्ञान, विज्ञान की पूर्णता है ,चरम है |इसे जानने के बाद कुछ भी जानना शेष नही रह जाता ,कुछ भी अप्राप्त नही होता | इसे ही वेदांत कहते है .वेद=ज्ञान !वेदांत अर्थात ज्ञान का अंत ,जहां ज्ञान का सीमा समाप्त हो जाय ,ऐसा कोई ज्ञान नही जो जानना शेष रह जाय |

भगवान श्री कृष्ण-अर्जुन से कहते है , हे अर्जुन यह ज्ञान (अविनाशी-योग) को मैने सूर्य से कहा था, सूर्य ने अपने पुत्र वैवस्वत् मनु से कहा, मनु ने राजा इक्ष्वाकु से कहा, इस प्रकार परम्परा से प्राप्त इस योग को राजर्षियों ने जाना , कुछ काल पर्यन्त यह ज्ञान पृथ्वी लोक में लुप्तप्राय हो गया है , वही ज्ञान आज मै तुझे दे रहा हूं , तू मेरा प्रिय शिष्य है, सखा है तूझे ज्ञान का रहष्य विज्ञान सहित कहूँगा जिसे जानने के बाद कुछ भी ज्ञान जानना व प्राप्त करना शेष नहीं रह जायेगा ,मेरे और तेरे में कोई भेद नही रह जायेगा ,ज्ञान -सामर्थ में पूर्ण हो जायेगा !

इस प्रकार आत्म-योग [ज्ञान] के लिए,अर्जुन को भगवान श्री कृष्ण ध्यान के अभ्यास से आत्म-योग की दीक्षा देते है !

अर्जुन कहते है -प्रभु मन बड़ा गतिमान है इसको रोकना वायु को रोकने के समान दुष्कर है !

भगवान -नि:संदेह ये प्रमथन स्वभाव वाला मन को रोकना वायु को रोकने के समान दुष्कर है ,परन्तु अभ्यास अर्थात जिन जिन विषयादि में मन जाता है वहा से हटाकर पुन : पुन: मन को आज्ञाचक्र में मुझ में लगा इस प्रकार अभ्यास से वैराग्य होगा और वैराग्य से ये प्रमथन स्वभाव वाला मन वश में होने में शक्य है ! इस प्रकार मन वश में हुवा = दुनियावश में - इसी को एक ही साधे सब सधै कहा गया है-

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।

ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥

भावार्थ : यह स्थिर न रहने वाला और चंचल मन जिस-जिस शब्दादि विषय के निमित्त से बाहर संसार में विचरता है, उस-उस विषय से रोककर यानी हटाकर इसे बार-बार परमात्मा [अंतरात्मा] में ही निरुद्ध करे॥26॥

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् ।

उपैति शांतरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥

भावार्थ : क्योंकि जिसका मन भली प्रकार शांत है, जो पाप से रहित है और जिसका रजोगुण शांत हो गया है, ऐसे इस सच्चिदानन्दघन ब्रह्म के साथ एकीभाव हुए योगी को उत्तम आनंद प्राप्त होता है॥27॥

संत कबीर की भाषा में –योग अटपट आत्म रूप है .झट-पट लखै न कोय ! मन के खट -पट जब मिटय चट-पट दर्शन होय !!

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था, वसुन्धरा पुण्यवती च तेन ।

*अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् , लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेत: ॥

कहते है -माँ का ऋण सबसे बड़ा होता है , उससे मुक्त नही हुवा जा सकता |लेकिन ,यदि उस माँ के गर्भ से कोई ऐसा सन्तान जन्म ले ले जो स्वाध्याय से पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त हो कर पूर्ण समर्थ ज्ञानवान हो जाय ,तो उसका वह कुल पवित्र हो जाता है , जिस माता के गर्भ से उनका जन्म होता है वह भाग्यवती जननी कृतार्थ हो जाती है ,अर्थात मुक्त हो जाती है क्योकि उसका वह सन्तान पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त होने से पुन: माँ के गर्भ में नही आता जिससे वह माँ के ऋण से उऋण हो जाता है! वह जननी कुछ भी न करते हुवे भी मुक्त-कृतार्थ हो जाती है |

जहाँ ऐसे पूर्ण ब्रह्म को प्राप्त ब्रह्म -वेत्ता का चरणरज पड़ती है वह वसुन्धरा भी पुण्यवती हो जाती है। श्रीसद्गुरुजी कहते है , विश्व में ऐसा पूर्ण समर्थ-ज्ञानवान -सत्यनिष्ठ कोई एक हो जाय ,देश में, प्रदेश में ,शहर में , मुहल्ले में , गाँव में , हर घर में , हर एक ऐसा हो जाय तो संसार में सतयुग हो जाय !

पूर्ण ज्ञान को प्राप्त होने पर , जाति-सम्प्रदाय , धर्म -पन्थ , दल [पार्टी] , उंच -नीच , भाषा-बोली , मैं और तू के भेद से मनुष्य उपर उठ जाता है ! वास्तव में वही सच्चा ज्ञानी है , संत है |

जहा सत्य वही धर्म ,वही ईश्वर-भक्त ,वही जय -विजय ! सनातन=सदैव नूतन,भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालो में समान रूप से शाश्वत-सत्य ! (तत् सत्=परमात्मा) | वैदिक सनातन धर्म ही यथार्थ मूल धर्म है ,लोग अज्ञानता वश अलग -अलग नाम और पंथ बना लिए हैं , इतिहास देखें तो इन सबके मूल -उद्गम वैदिक सनातन धर्म ही है |

अयं निजःपरो वेति गणना लघुचेतसाम् |उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् |

अर्थात् : यह मेरा है , यह उसका है ; ऐसी सोच संकुचित चित्त वोले व्यक्तियों की होती है; इसके विपरीत उदारचरित वाले लोगों के लिए तो यह सम्पूर्ण धरती ही एक परिवार जैसी होती है |

हमारे दर्शन -धर्म में सब भूतो को अपने विभिन्न अंगो की तरह अभेद देखा गया है | विभिन्न रूपों में एक ईश्वर का दर्शन है -

सब भूतों को अपने विभिन्न अंगो की तरह देखता है , वही यथार्थ देखता है | [श्रीमद्भागवत्गीता] अपने सहित हर रूप में एक ईश्वर कि प्रतीति , समझिये सत्य [ईश्वर] के निकट है | यही प्रेम-भक्ति-ज्ञान- योग, सम्यक दर्शन है और ये है -समदर्शियता , हमारा अभेद-अद्वैत, सनातन-दर्शन सिय राम मय सब जग जानी , करहु प्रणाम जोरी जुग पानी ।।-----गोस्वामी तुलसीदास "रामचरितमानस"

बहुनाम जन्मनां अन्ते ज्ञानवान माम प्रपद्यते। वासुदेवं सर्वम इति स महात्मा सुदुर्लभं:।।

अर्थात बहुत जन्मो के अंत के जन्म में कोई ज्ञान को प्राप्त हुवा ,सब वासुदेव [ईश्वर] ही है ऐसा जानता है ,ऐसा महत्मा सुदुर्लभ कहा गया है| श्रीमद्भागवत्गीता

जो न किसी से द्वेष करता है और न ही किसी की आकांक्षा करता है , वही संन्यासी है| , योगी है !---------- श्री कृष्ण|

धर्म क्या है ?

हिन्दू ! मुस्लिम ! सिक्ख !इसाई! यहूदी आदि-आदि ! धर्म का सीधा अर्थ ले कर्तव्य अर्थात करने योग्य कर्म ! अब विचार करें करने योग्य कर्म अर्थात ''धर्म'' क्या है ?

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है- परहित सरिस धरम नहि भाई , परपीड़ा सम नही अधमाई। परहित अर्थात दूसरों का भलाई से बढ़कर कोई धर्म नहीं है व दूसरों को पीड़ा पहुंचाने के समान कोई अधर्म नही है। परहित से पहले स्वहित क्या है?ये समझे, क्योंकि इसके बिना परहित नही हो सकता , सबसे बड़ा व यथार्थ स्वहित होता है अपने आपको जानना अर्थात आत्मज्ञान होना। इस ज्ञान के बाद कुछ भी जानना शेष नही रह जाता इसे वेदांत कहते है।अर्थात ज्ञान का अंत हो जावे , सीमा समाप्त हो जावे,संपूर्ण ज्ञान हो जाये।

इसके लिए हमें जैसा मार्गदर्षन हमारे मनीषियों से मिला है, वैसा ध्यान-योग्य का अभ्यास करना होगा। इस अभ्यास से हमारी बुद्धि जो विकारों काम , क्रोध, मोह, लोभ, मान-मत्सर से ग्रसित है से धीरे-धीरे मुक्त होती जाती है व अंत में हमारी बुद्धि इंन्द्रियों के अधीनता से मुक्त हो करके आत्मा के अधीन हो जाती है।

-इस अवस्था में बुद्धि आत्मा (परमात्मा) की प्रेरणा से कार्य करती है। (आत्मा परम है इसलिए इसे परमात्मा भी कहते है) इस अवस्था को ही मुक्ति, मोक्ष, कैवल्य कहा गया हे।

परवश जीव, स्ववश भगवन्ता।

परवश अर्थात इंद्रियों के वश में जो हो उसे जीव कहा गया है , स्ववश अर्थात आत्मा के वश में हो, उसे भगवंता अर्थात भगवान कहा गया है। यहां सत्य (परमात्मा) के सिवाय कुछ नही होता है। इस अवस्था में बुद्धि को आत्मा से समाधान प्राप्त होता है। इसे ही समाधि कहा गया है। इस अवस्था को प्राप्त करने के बाद ही हमारे द्वारा परहित हो सकेगा। इससे पूर्व हमारी बुद्धि विकारों से ग्रसित होने से विकारों से

आवेषित होती है। इस प्रकार विकारों से मुक्त हुए बिना न हमारा स्वयं का हित है और नाही हमारे द्वारा किसी का हित हो सकता है।

जैसे किसी संक्रामक रोग से ग्रसित रोगी किसी दूसरे रोगी के पास उसके हित करने के उद्देश्य से जाएगा, तो होगा यह कि वह अपना रोग उसमें फैलाएगा व उसका अपने में, अतः हित होने के बजाय और अहित हो जायेगा।

इसी प्रकार विकारों (काम , क्रोध, मोह, लोभ, मान, मत्सर,घृणा,) से ग्रसित मनः स्थिति वाला व्यक्ति किसी का भला नही कर सकता वह और बिगाड़ेगा। यदि कुछ बन जाए तो उसे संयोग कहा जाए ।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि , शरीर निर्वाह के लिए आवश्यक मेल-मिलाप कर्म करते हुए साधना करें जिससे हमारी बुद्धि निर्मल हो , आत्मस्थ हो अर्थात आत्मा की प्रेरणा से कार्य करें, तभी अपना व औरों का हित (कल्याण)हो सकेगा।

कहा गया है - शास्त्र के प्रयोजन एवं उद्देश्य को अध्ययन व अभ्यास कर पहले स्वयं आचरण में लाए तत्पश्चात घर-घर, गांव-गांव, देश-देश जाकर अध्ययन व अभ्यास कराकर आचरित कराए उसे आचार्य कहा गया है।

इससे बढ़कर स्वहित व परहित कुछ भी नही हो सकता। यही धर्म है (कर्तव्य है)

कहा गया है- सूर्य रूपी आत्मा (परमात्मा) सबमें समान रूप से विराजमान है , विकाररूपी बादल से आच्छादित है , ध्यान के द्वारा विकाररूपी बादल हटता है। विकार रूपी बादल हटा कि सूर्य रूपी आत्मा प्रगट। आत्म साक्षात्कार हो जाता है , सत्य का बोध हो जाता है, इसके लिये कोई आडंबर, कर्मकांड की आवश्यकता नहीं है। कही आने-जाने की आवश्यकता नहीं हैं। जिसे पाना है , वो आप में है , जिसे

जानना है वह आप ही है । यही वह ज्ञान है जिसे जानने के बाद कुछ भी ज्ञान जानना शेष नही रह जाता व प्राप्त होना शेष नही रह जाता । वह समर्थ हो जाता है।अश्टसिद्धि -नौ निधि सब प्राप्त हो जाता है । वह जो बोलता है वैसा होता है । संत कबीर ने कहा है:-

योगी निरंजन से बड़ा, कपड़ा रंगे रंग लाल से,

वाकिफ नही उस रंग से, कपड़ा रंगे से क्या हुआ ।

पोथी पुस्तक, किताबें बांचता, लोगो को नित समझाता

भृकुटि मध्य खोजे नही, बक-बक मरा तो क्या हुआ ।

बाइबिल में लिखा है- तुम द्वार खटखटाओं तुम्हारे लिये दरवाजा खुलेगा । ये भृकुटि (आज्ञा चक्र) में ध्यान करना ही द्वार खटखटाना है । प्रश्न है ? ये हमार शरीर को कौन चला रहा है ?

बोलता कौन है ? बोलवाता कौन है ? मैं कौन हूं ? सत्य क्या है ? यही तो है जिसे जानना है ? इसका बोध होने पर कुछ भी ज्ञान जानना शेष नही रह जाता । वही तो है परमात्मा , अल्लाह, ईश्वर, शक्ति , सद्‌गुरू, कुण्डली, चाहे जो नाम कहें - इसे प्रकाश कहा गया है - आत्मा स्वयं ज्योर्तिभवति। अल्लाह नूर है । **GOD IS LIGHT** । भाषा भिन्न है लेकिन वह है एक ही , वह सर्वत्र घट-घट में संपूर्ण चराचर में व्याप्त है विश्व के अणु -रेणु में व्याप्त है ,इसलिए विष्णु भी कहते हैं जो हमारे भीतर आत्म तो रूप में अंतरात्मा ही है ,इनका ही बोध होना , मनुष्य जीवन का मूल कर्तव्य अर्थात धर्म है! यही सनातन है, सनातन धर्म अर्थात कर्तव्य है !

ये बात अभी सुनी-सुनी , पढ़ा-पढ़ी है। इसे जानना है इसके लिये ध्यान योग का अभ्यास करना होगा। ज्ञान होने पर वह पूर्ण समर्थ ज्ञानवान हो जाता है , सभी प्रकार का भेद समाप्त हो जाता ,सब को वह अपने अंगों की तरह अभेद -आत्मवत देखता है ,और यह है सब धर्मों का मूल हमारा यथार्थ वैदिक सनातन धर्म –दर्शन।

धारणा बराबर हो तो ध्यान -समाधि होगा।

कोई [वाल्मीकि जी] मरा-मरा जप कर राम को प्राप्त कर लिए ,क्यों कि यहा नाम जरुर उल्टा है पर धारणा-ध्यान सही -आत्मा राम है।

रमन्ते योगिनो हृदये अस्मिन स राम:!

बहुतायत हम राम -राम जप कर भी राम [आत्माराम] को प्राप्त नही कर पाते क्यों कि यहा नाम सही है पर धारणा राम नही काम होता है।

उल्टा नाम जपय जग जाना ,वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना ! धारणा सही हो तो ध्यान और समाधि होती है , मूल धारणा का है ,धारणा सही होना । नाम राम का तो ध्यान भी राम [आत्माराम=अंतरात्मा] में हो तभी समाधि होगी [समाधि =धी = बुध्धि आत्मा में समाहित हो ,बुध्धि को आत्मा से समाधान प्राप्त हो]।

वाल्मीकि जी भले ही नाम उल्टा जपे लेकिन उनका धारणा -ध्यान सही अर्थात राम [आत्माराम] में था इसलिए राम [ब्रम्ह] को प्राप्त हुवे । कुछ लोग नाम सीधा लेते है लेकिन ध्यान काम में होता है इसलिए परिणाम नही आता।

राम = आत्माराम [परमामा-] ब्रम्ह ,आत्मतत्व का चिंतन करने वाले अर्थात मन से अपने अंतरात्मा में रमने वाले - सुजान ,ज्ञानवान समर्थ भगवान हो जाते है ! व

काम [विषयों] अर्थात बाहर अन्य किसी में - द्वैत भाव में रमने वाले या चिंतन करने वाले -----

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते ।

संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥

भावार्थ : विषयों का चिन्तन करने वाले की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है , आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है॥62॥

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

भावार्थ : क्रोध से अत्यन्त मूढ़ भाव उत्पन्न हो जाता है , मूढ़ भाव से स्मृति में भ्रम हो जाता है, स्मृति में भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से मनुष्य अपनी स्थिति से गिर जाता है॥ 63॥ व विक्षिप्त ,पागल हो जाता है---

योग अर्थात बुध्धि का आत्मयोग [आत्मा में समाहित होना ,मिलना ,बुद्धी को आत्मा [अंतरात्मा] से समाधान प्राप्त होना ही समाधि है ,योग है ! इस स्थिति में मन सहित इंद्रिय अपने वश में होता है ,व बुध्धि आत्मा के समाधान [निर्देशन] से कार्य करती है ! जिससे यम= [अहिंसा ,सत्य ,अस्तेय ,ब्रम्हचर्य ,अपरिग्रह] ! नियम = [शौच ,संतोष ,तप ,स्वध्याय , ईश्वर प्रणिधान] ! प्राणायाम , प्रत्याहार ! ये सब सहज व्यवहार [आचरण] में आ जाता है ! इसीलिए पूर्ण ज्ञानी सद्गुरु ,साधक को

यम -नियम-आसन-प्राणायाम से पहले सीधा प्रत्याहार -धारणा- ध्यान से समाधि [आत्मयोग] कराते है ।

इसी को एक ही साधे सब सधै कहा गया है --

हम बताये मार्ग पर चलने के बजाय ,मार्ग बताने वाले को पकड़ लेते है ,मंजिल इसीलिए नही मिलती । जिनका ध्यान स्वयं ब्रम्हा जी ,भगवान विष्णु , महादेव शंकरजी , भगवान श्री राम , हनुमान जी , भगवान बुध्ध व सभी साधक , सिध्द, सुजान , भगवान करते है , जो सम्पूर्ण सचराचर में शक्तिरूप में विदयमान है , जिनकी चेतना से हम [सम्पूर्ण चराचर ,अखिल ब्रम्हान्ड] चैतन्य है , प्रकाशित है , सुन्दर है, सुगन्धित है , उस घट-घट वासी .विश्व के अणु -रेणु में विद्यमान सर्वेश्वर, आत्माराम =परमात्मा , आत्म देव [अंतरात्मा] का मै मुमुक्षु नमन करता हूँ , शरण लेता हूँ ,वह आत्मदेव ही है मै नही ।

ईश्वर = वो महाशक्ति जिसकी चेतना से हम सब अखिल ब्रम्हांड , सम्पूर्ण चराचर चैतन्य है प्रकाशित है, सुगन्धित है, सुंदर है, संचालित है ,जीवंत है । इनका ही स्मरण -ध्यान स्वयं ब्रम्हा जी, भगवान विष्णु, महादेव शंकरजी, भगवान श्री राम , हनुमान जी , भगवान बुद्ध व सभी साधक , सिध्द, सुजान ,भगवान करते है जिसके कारण सब शक्तिसम्पन्न ,समर्थ है । इसे ही आत्मा , परमात्मा , ईश्वर ,भगवान् . महाशक्ति, कुंडलनी आदि आदि कहते है यही सद्गुरु है, सत=आत्मा गुरु अर्थात सद्गुरु है , जो सब का ईश्वर है । ये सर्वत्र कण-कण में व सबसे निकट आत्मरूप में हमारे भीतर अंतरात्मा ही है । वो ज्योतिस्वरूप है ,. आत्मा स्वयम ज्योतिर्भवति । अल्लाह नूर है ! **GOD IS LIGHT** ,कहा गया है इनका ही दर्शन

अर्थात साक्षात्कार करना है ये ही कारक है । और बाहर जितने मन्दिर ,मस्जिद ,गुरु द्वारा ,गिरिजाघर ,व ज्योति दर्शन जो है वो स्मारक है अर्थात कारक [ईश्वर] का स्मरण दिलाने वाला । कारक [ईश्वर]जो सर्वत्र है व सबसे निकट हमारे भीतर आत्मरूप [शक्तिरूप] में विद्यमान है जो सबका ईश्वर है ।
ये है आत्मा-राम =रमन्ते योगिनो हृदये अस्मिन स राम: !! और ये है कबीर ,तुलसी ,सुरदास ,मीरा ,भगवान महादेव के राम ! राम के रामेश्वरम ! सर्वं ईश्वरम ! ये सब इनका ही ध्यान करते है व इनकी चेतना से ही सब चैतन्य ,प्रकाशित ,सुंदर है ,इनसे ही सबका अस्तित्व है, ये ही सद्‌गुरु, ईश्वर ,भगवान ,आदिशक्ति ,ब्रम्ह ,परमात्मा ,कुंडलनी है । यही कुल देवता है, कुल = कुंडलनी ।

-उत्तमा सहजावस्था , मध्यमा ध्यान -धारणा, मंत्रजपस्यात अधमा , होमपूजा अधमाधमा । अर्थात आत्म योग लिए सबसे उत्तम सहजावस्था है , धारणा ध्यान मध्यम व होम पूजा अधम से अधम अर्थात सबसे निम्न प्रक्रिया है । ये आत्म योग के संदर्भ में है कोई अन्यथा न ले न जाने समझे -श्रीसदगुरुजी -----बुध्धि का आत्म योग [आत्मज्ञान] के लिए सबसे उत्तम सहजावस्था है -- इसमे चलते -फिरते ,उठते- बैठते ,सोते -जागते , ग्रहण करते हुवे त्यागते हुवे हर समय अपने में रहना अर्थात अपने भीतर विराजमान ब्रम्ह में रमे रहना । सहज सहज सब कोई कहे सहज न

चिन्हे कोय आठो प्रहर भीनी रहे सहज कहावय सोय [संत कबीर] ये सहजावस्था है ।

मध्यमा ध्यान-धारणा--नियमित ध्यान का अभ्यास=जिन जिन विषयादि , या अन्य बाहर किसी व्यक्ति या पदार्थ या अन्य में मन जाता है वहां से हटाकर पुन: पुन:अपने में अर्थात अपने भीतर विराजमान ब्रम्ह में [अंतरात्मा में] मन को आज्ञा -चक्र में लगाना यही ध्यान योग अभ्यास है ! जैसे चित्रकार किसी का चित्र बनाता है तो मन में जिसका चित्र बना रहा होता है उसका छवि [अक्श] के सिवाय कुछ नही होता ध्यान ऐसा हो । मन्त्र जपस्यात अधमा --- इसमे मन्त्र [नाम] का जाप करते हुवे नामी [ब्रम्ह ;परमात्मा] का स्मरण करते है नाम जपना व नामी को याद करना । मन एक समय एक ही कार्य करता है , नाम फिर नामी =जिसका नाम है उसका रूप का स्मरण एक समय ऐसा आएगा की नाम छुट जायेगा नामी रह जायेगा फ़िर ध्यान लग गया । होम पूजा अधमाधमा । होम पूजा सबसे निम्न कहा गया है क्यों की ये अंर्तमार्ग है । बाहर के पट मूंद के तू भीतर के पट खोल रे तोहे हरि मिलेंगे । साधक का यदि पिछला अभ्यास [साधना] हो तो उपरोक्त स्थिती सहजावस्था सहज प्राप्त कर लेता है अन्यथा निचे से ही ऊपर जाता है ,सबका अनेक जन्म के संस्कार अनुसार , अवस्थानुरूप महत्व है ।

भक्ति बीज पलटय नही, जावत जुग अनन्त ।
निच उच घर अवतरय , अंत संत का संत ।।

!! यत्रनार्यस्तुपूज्यंते रमन्ते तत्र देवता !!

नार्यस्तु अर्थात नर या नारी शरीर नहीं , इसे [शरीर को] धारण करने वाली कुण्डलनी शक्ति ,जिससे ये शरीर अर्थात हम चल रहे है , जो सम्पुर्ण जगत को धारण किया है , जिसकी चेतना से हम सम्पुर्ण चराचर चैतन्य है ,उसे कहा गया है ! इस महाशक्ति को ही नार्यस्तु =कुंडलनी , आत्मा,परमात्मा, सद्गुरु,ईश्वर , ब्रम्ह आदि आदि कहा गया है । इसका अर्थ यह है-जहा इनकी [नार्यस्तु=कुंडलनी की] पूजा होती है वहा हर प्रकार की दिव्यता होती है । आजकल पुरुष शक्ति ,नारी शक्ति कहा जा रहा है । शक्ति पुरुष या नारी नही होता वो केवल शक्ति है । हां शरीर का ऐसा नाम रख सकते है । -पंच तत्व के शरीर को नही पंचतत्व के शरीर को धारण करने वाले तत्व[परमात्मा] अर्थात आत्मा राम को भजना है । देह को नही देही=देह को धारण करने वाला [आत्माराम] हमारे शरीर व पुरे अखिल ब्रम्हांड व सम्पूर्ण चराचर को धारण करने वाला शक्ति [तत्व] अर्थात परमात्मा , अंतरात्मा को जपना है , जो सबका ईश्वर है । ईश्वर = वो महाशक्ति जिसकी

चेतना से हम सब अखिल ब्रम्हांड ,सम्पूर्ण चराचर चैतन्य है प्रकाशित है , सुगन्धित है , सुंदर है , संचालित है , जीवंत है ! इनके ही स्मरण , ध्यान स्वयं ब्रम्हा जी , भगवान विष्णु , महादेव शंकरजी , भगवान श्री राम , हनुमान जी , भगवान बुद्ध व सभी साधक , सिध्द, सुजान , भगवान करते है जिसके कारण सब शक्तिसम्पन्न , समर्थ है जो सब का ईश्वर है ! इसे ही आत्मा ,परमात्मा , ईश्वर ,भगवान् . महाशक्ति , कुंडलनी आदि आदि कहते है यही सद्गुरु है , सत=आत्मा गुरु अर्थात सद्गुरु है ! ये सबसे निकट आत्मरूप में हमारे भीतर अंतरात्मा ही है ---वो ज्योतिस्वरूप है आत्मा स्वयम ज्योतिर्भवति ! अल्लाह नूर है ! GOD IS LIGHT ,कहा गया है इनका ही दर्शन अर्थात साक्षात्कार करना है ये ही कारक है और बाहर जितने मन्दिर मस्जिद गुरु द्वारा गिरिजाघर व ज्योति दर्शन जो है वो स्मारक है अर्थात कारक [ईश्वर] का स्मरण दिलाने वाला ।

कारक [ईश्वर]जो सर्वत्र है व सबसे निकट हमारे भीतर आत्मरूप [शक्तिरूप]में विद्यमान है जो सबका ईश्वर है । ऐसी धारणा के साथ ईश्वर का नाम लेते हुवे उनके रूप का स्मरण ,नाम फिर नामी अर्थात जिसका नाम है उसका रूप का ध्यान [स्मरण]इस प्रकार अंतरात्मा को जपने से ,ध्यान करने से - ध्यानं निर्विषयम मन : सभी विकार धीरे- धीरे समाप्त होते जाता है , व एक समय ऐसा आएगा

जिसमे मन पुर्णत: निर्विकार निर्विषय हो जाता है !व इस प्रकार जपने वाला वही हो जाता है जिसे वह जपता है , अर्थात भेद समाप्त हो जाता है ,ज्ञान सामर्थ व रूप में वह वही [ईश्वर] ही हो जाता है ।

प्रेम गली अति सांकरी जा में दोऊ समाय ।

जब मै था तब हरि नही अब हरि है मै नाहि !!

गुरु-सद्‌गुरु-भगवान , ईश्वर कौन ?

गुरु अर्थात सदगुरु सत मायने आत्मा-गुरु ! आत्मा परम है इसलिए परमात्मा कहते है , कुंडलनी , भगवान , ईश्वर भी कहते है , यही सदगुरु है। जो सम्पूर्ण चराचर में शक्ति रूप में विद्यमान है । वो निर्गुण निराकार है वो प्रकाश- ज्योतिस्वरूप है , कहा गया है आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती ! अलाल्ह नूर है। गॉड इस लाइट ! वो सर्वत्र कण-कण में सम्पूर्ण चराचर में व्याप्त है व सबसे निकट हमारे भीतर है , हम उसी चेतना से चैतन्य है। रूप भिन्न है व उनमे तत्व [ईश्वर] एक ही है , विभिन्न रूपों में उसी एक तत्व [ईश्वर] का स्मरण करना है , जिससे हम आप व जितने चराचर है वो चैतन्य है ,प्रकाशित है ,सुगन्धित है सुंदर है ,उस तत्व का स्मरण करना है ! पंच तत्व के शरीर को धारण करने वाले इसी तत्व [शक्ती] जिससे हम आप व सम्पुर्ण सचराचर ,अखिल ब्रम्हाण्ड प्रकाशित ,संचालित है ,जीवंत है का स्मरण ,ध्यान स्वयं

ब्रम्हा जी ,भगवान विष्णु , महादेव शंकरजी , भगवान श्री राम , हनुमान जी , भगवान बुद्ध व सभी साधक ,सिध्द, सुजान ,भगवान करते है जिसके कारण सब शक्तिसम्पन्न ,समर्थ है उनकी ही ध्यान आज्ञा चक्र में करते है ! इसे ही आत्मा ,परमात्मा ईश्वर महाशक्ति आदि आदि कहते है यही सद्‌गुरु है सत=आत्मा ही सद्‌गुरु है ! ये सबसे निकट आत्मरूप में ये हमारे भीतर अंतरात्मा ही है दैहिक , दैविक,भौतिक तापा ! राम राज नहिं काहुहि ब्यापा !![गोस्वामी तुलसीदास] राम राज = बुध्धि का आत्मस्थ होना ! बुध्धि आत्मा [भीतर विराजमान परमात्मा अर्थात आत्मा-राम]की प्रेरणा से कार्य करे अर्थात हमारे भीतर आत्मा राम का राज हो --- तब दैहिक=शारीरिक , दैविक =प्राकृतिक , भौतिक= पदार्थ आदि किसी तरह का ताप=दुःख नहीं होता। आत्म् योग से बुध्धि को आत्मा से समाधान [सुझ -बुझ] प्राप्त होता है , अर्थात परमात्मा के निर्देशन से कार्य होता है। इसे समझने के लिए इंद्रियों को घोड़ा व मन को लगाम ,बुध्धि को सारथी व आत्मा को रथी कहा गया है , योग से इंद्रिय रूपी घोड़े मनरूपी लगाम के व मनरूपी लगाम बुध्धि रूपी सारथी के नियंत्रण में होता है व बुध्धी रूपी सारथी आत्मा रूपी रथी [अंतरात्मा] के निर्देशन ,सुझबुझ [समाधान] से कार्य करती है ,जिससे प्रत्येक कार्य व व्यवहार आदर्श ,उत्कृष्ट [सर्वोतम] ,कुशल होता है !जिससे किसी प्रकार का ताप -दु:ख़ नही होता ,बल्कि आनन्द -परमानन्द होता है।

शुन्य शहर तक सब गये ,शुन्य से आगे नाही।
शुन्य से आगे जे गये मंद -मंद मुसकाय !! [संत कबीर]
अहम् ब्रम्हास्मि ! अर्ताथ मै ब्रम्ह [ईश्वर] हूँ।

ज्ञान सही है पर अधुरा है , ऐसा तो रावण , हिरणकश्यपु भी कहे है । केवल मुझमे या तुझमे ईश्वर -ब्रम्ह-रब दीखना अहंकार है ,मोह है ,स्वार्थ है ,काम है ।
जिस दिन अपने सहित सबमे ईश्वर [ब्रम्ह] अर्थात सर्वम ब्रम्ह["सर्वं खल्विदं ब्रह्म "] का बोध हो जाय तब ज्ञान पूर्ण होगा । जिस दिन सब में रब दिखने लगे तब ज्ञान पूर्ण होगा , तब वह मौन होगा ,शांत होगा संशय रहित आनंदित होगा । यही प्रेम-ज्ञान-भक्ति है , योग है।

--श्री सद्गुरुजी के उद्बोधन व श्री मदभगवत गीता पर आधारित --

-कृष्ण, आत्मा [परमात्मा] का नाम है । जो कृष धातु और अन प्रत्यय से बना है [कृष +अन] कौन कृष्ण ? कृष जिसका ष हलन्त है । कृष =कर्ष =आकर्षण Attraction जिसने सबको आकर्षित किया है, धारण किया है । अर्थात जो समपुर्ण संसार को आकर्षित किया है, धारण किया है उस शक्ति -आत्मा [परमात्मा] का नाम कृष्ण है । जो घट -घट ,कण -कण ,विश्व के अणु रेणु में विद्यमान है ,इसलिए विष्णु भी कहते है । जो सम्पूर्ण चराचर में ,सबमे शक्ति रूप में व्याप्त है ,जिनकी चेतना से हम सब चैतन्य -प्रकाशित -सुगंधीत -सुंदर -शक्तिमान है , ऐसी धारणा के साथ अपने भीतर विराजमान आत्मा [परमात्मा, अंतरात्मा] को भजेंगे तब बुध्धी का आत्म योग होगा । अर्थात परमात्मा को प्राप्त करेंगे ,योग भीतर होता है ,उनको प्राप्त करना मायने ज्ञान-सामर्थ -रूप में वही हो जाना है । बाहर भी वही है पर द्वैत भाव से भजेंगे तो आपकी संकल्प , कामनाए पूर्ण होगी लेकिन आप उन्हें [परमात्मा]

को नहीं प्राप्त करेंगे , क्यों कि बुध्धी का आत्म-योग भीतर ध्यान-योग अभ्यास से होता है , सा भजना ही सही है । द्वैत भाव से बाहर भजेंगे तो योग नहीं होता ,आत्म -योग के लिए ऐसा भजना अविधी पूर्वक है । जितने मंदिर , देवालय आदि है ,वे सब स्मारक अर्थात लक्ष्य का स्मरण दिलाने वाला है। कारक-सर्वत्र कण -कण में सम्पूर्ण चराचर में व सबसे निकट हमारे भीतर विराजमान है।

वो निराकार है , ज्योति स्वरुप है -आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवती।

अलाल्ह नूर है । GOD IS LIGHT । भाषा भिन्न है पर वो है एक ही ,यही ईश्वर है । जिन्हें इनका बोध हो वह सुगुण रूप में राम [ईश्वर]है यही बीच-बीच में पूर्ण -सगुण रूप में भी प्रगट होते है । जैसे त्रेता में राम रूप में द्वापर में कृष्ण रूप में ,वास्तव में यही सद्गुरु है । सद =आत्मा अर्थात आत्मागुरु = सद्गुरु है , जो हममे सबसे निकट हमारे अंतरात्मा ही है ।

श्री मदभगवत गीता -७ वा अध्याय

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥

भावार्थ : उन-उन भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे लोग अपने स्वभाव से प्रेरित होकर उस-उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को भजते हैं अर्थात पूजते हैं॥20॥

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

भावार्थ : जो-जो सकाम भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है, उस-उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ॥21॥

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥

भावार्थ : वह उस श्रद्धा से युक्त होकर उस देवता का पूजन करता है और उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किए हुए उन इच्छित भोगों को निःसंदेह प्राप्त करता है॥22॥

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥

भावार्थ : परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान है तथा वे देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें , अन्त में वे मुझको ही प्राप्त होते हैं॥23॥

मुझको प्राप्त होना अर्थात बुध्धि का आत्म योग होना =वही हो जाना =ज्ञान सामर्थ गुण रूप सबमे पूर्ण हो जाना .समर्थ होना ,भेद समाप्त हो जाता है। ,फ़िर हरि है मै नाहि **-- बाहर के पट मुंद के तू भीतर के पट खोल रे तोहे हरि मिलेंगे --**

योग: कर्मसु कौशलम्' –

योग = बुध्धि का आत्मा [अंतरात्मा ,परमात्मा]से योग , मिलन से कार्य में कुशलता आती है ! आत्म् योग से बुध्धि को आत्मा से समाधान [सुझ -बुझ] प्राप्त होती है , अर्थात परमात्मा के निर्देशन से कार्य होता है । इसे समझने के लिए इंद्रियों को घोड़ा व मन को लगाम ,बुध्धि को सारथी व आत्मा को रथी कहा गया है , योग से इंद्रिय रूपी घोड़े मनरूपी लगाम के व मनरूपी लगाम बुध्धि रूपी सारथी के नियंत्रण में होता है व बुध्धी रूपी सारथी आत्मा रूपी रथी [अंतरात्मा] के निर्देशन ,सुझबुझ [समाधान] से कार्य करती है ,जिससे प्रत्येक कार्य व व्यवहार आदर्श ,उत्कृष्ट [सर्वोतम] ,कुशल होता है ।

योग

योग = जुड़ना । किनसे जुड़ना ? अपने से ! अपना कौन ? जिस शक्ति से हम चल रहे है वो अंतरात्मा , ये ही परमात्मा है । आत्मा परम है इसलिए परमात्मा ,ब्रम्ह [ईश्वर] कहते है । जिससे अखिल ब्रम्हांड व हम स्वयं संचालित है , चैतन्य है , प्रकाशित ,सुगन्धित, सुंदर । है वो साथ न दे तो हम पलक नहीं झपका सकते ! जिसे हम हिन्दू आत्मा स्वयं ज्योतिर्भाव्ती । मुस्लिम- अल्लाह नूर है । व क्रिशचन गॉड इस लाइट कहते है । भाषा भिन्न है पर वो है एक ही । वो सर्वत्र कण-कण में विश्व के अणु-रेणु में विद्यमान है इसलिए विष्णु भी कहते है , यही सद्गुरु है । जो सबसे निकट हमारे भीतर आत्म रूप में विराज मान है ,हम इन्ही के चेतना से चैतन्य है ,प्रकाशित है सुगंधीत है सुंदर है । मन जो औरो में बाहर विचरण कर रहां है, उसे इसी महाशक्ति [अंतरात्मा ,परमात्मा] में अपने भीतर लगाना योग का अभ्यास कहलाता है । पूर्ण योग हो गया तो हम वही है ,फिर शक्ति सामर्थ ज्ञान में पूर्ण होंगे , समर्थ होंगे । जिनका जितना योग है वह उतना चैतन्य ,प्रकाशित ,सुगन्धित , सुंदर है । पूर्ण आत्म- योग [मिलन] हो जाने पर,पूर्ण चैतन्य , प्रकाशित ,सुगन्धित ,सुंदर होंगे फ़िर वह शुध्द ईश्वर का ही स्वरूप होगा । इसके बाद ऐसा कोई ज्ञान नही जो जानना शेष रह जाय ,ऐसा कुछ भी नही जो अप्राप्त हो ! यही योग व समाधि है ! समाधि = धी नाम बुध्धि का आत्मा में समाहित [योग , मिलन] होना बुध्धि को आत्मा से समाधान प्राप्त होना ही समाधि है,योग है ।

आज कल कुछ लोग आसन व प्राणायम को ही योग समझते है । धारणा ध्यान से समाधि को प्राप्त करना अर्थात मन [बुध्धि] का अंतरात्मा से पूर्ण मिलन ही वास्तव

में योग है । अर्थात बुध्धि का आत्मयोग [आत्मा में समाहित होना ,मिलना] ही योग है । इस स्थिति में मन सहित इंद्रिय अपने वश में होता है ,व बुध्धि आत्मा के समाधान [निर्देशन] से कार्य करती है ! जिससे यम= [अहिंसा ,सत्य ,अस्तेय ,ब्रम्हचर्य ,अपरिग्रह] । नियम = [शौच ,संतोष ,तप ,स्वध्याय , ईश्वर प्रणिधान] ! प्राणायाम , प्रत्याहार ! ये सब सहज व्यवहार [आचरण] में आ जाता

है । इसीलिए पूर्ण ज्ञानी सद्गुरु साधक को सीधा धारणा- ध्यान से समाधि [आत्मयोग] कराते है । इसी को एक ही साधे सब सधै कहा गया है --

--- ---बाहर के पट मुंद के तू भीतर के पट खोल रे तोहे हरि मिलेंगे ।गुरु कुम्हार ,शिष्य कुम्भ है ,गढ़ -गढ़ काढ़े खोट ,भीतर हाँथ सहार दे बाहर मारे चोट ! [कभी बाहर हाँथ सहार दे भीतर मारे चोट] हर प्रकार का अहंकार -तन-बल ,धन-बल ,जन-बल ,बुद्धि-बल सब टूटता =समाप्त होता है ,फ़िर वास्तविक में जो बल है ,जिससे सब बल है ,जिससे हमारा अस्तित्व है -रामबल [आत्माराम] उसका बोध होता है.फ़िर हरि है मै नाहि --

श्री डी. एस. राय, श्री योगेश शर्मा पूज्नीय गुरूजी की सेवा में संलग्न ।

श्री महेश तकवाले, मैडम पंधेर, श्री मनोहर तेजवानी जी, श्री दीवान जी परम पूज्य गुरूजी के साथ यात्रा करते हुए ।

साकार और निराकार के उपासकों में उत्तमता का निर्णय

अर्जुन उवाच-

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।

ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥

भावार्थ : अर्जुन बोले- जो अनन्य प्रेमी भक्तजन निरन्तर आपके भजन-ध्यान में लगे रहकर आप सगुण रूप परमेश्वर को और दूसरे जो केवल अविनाशी सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म को ही अतिश्रेष्ठ भाव से भजते हैं-

उन दोनों प्रकार के उपासकों में अति उत्तम

योगवेत्ता कौन हैं?॥1॥

श्रीभगवानुवाच-

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।

श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥

भावार्थ : श्री भगवान बोले- मुझमें मन को एकाग्र करके निरंतर मेरे भजन-ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त होकर मुझ सगुणरूप परमेश्वर को भजते हैं, वे मुझको उत्तम मान्य हैं॥2॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।

सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥

सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥

भावार्थ : परन्तु जो इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके मन-बुद्धि से परे, सर्वव्यापी, अकथनीय स्वरूप और सदा

एकरस रहने वाले, नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी, सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को निरन्तर एकीभाव [अभेद] से ध्यान करते हुए भजते हैं, वे सम्पूर्ण भूतों के हित में रत और सबमें समान भाववाले योगी मुझको ही प्राप्त होते हैं॥3-4॥ मुझको ही प्राप्त होते हैं अर्थात बुध्दी का आत्म -योग ,आत्मबोध [ब्रम्हज्ञान] होने पर भेद समाप्त हो जाता है , फ़िर हरि है मै नाही---

जय गुरूजी

।। श्री जय गुरूजी ।।

परम पूज्य गुरूजी के पावन चरणों में सदैव प्रणाम करते हुए, उनसे विनती करके की गुरूजी, आप ही यह कार्य भी करवा लीजिए, जैसे सारे कार्य करवा लेते हैं ।

जब लिखने के लिए कलम उठाई तो मन में अनेकानेक स्मृतियाँ, गुरूजी के साथ उनके सान्निध्य में, शरण में रहते हुए जो क्षण उन्होंने दिये, कृपा की, दया की, सब एकसाथ उभर आये ।

उनके वाचनमृत जा समय समय पर उनसे प्राप्त हुए, उससे मेरे जीवन को और विचारों को उचित दिशा मिली, एक नई दिशा जिससे मेरे जीवन में सकारात्मक बदलाव आए । जिनका मुझे मेरे पारिवारिक और व्यावसायिक जीवन में समय समय पर मार्गदर्शन मिला ।

गुरूजी सदैव कहते ''डरना नहीं, हमारे परिवार का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता । भय नहीं रखना, बस गुरूजी को याद करो'' । नौकरी करने पर भी कई बार प्रसंग आए परंतु सदैव गुरूजी के ये शब्द कानों में गूंजते और सब भय समाप्त हो जाता । उनकी उपस्थिति सदैव अनुभव होती है । सदैव वो हमारे साथ ही है ।

जब गुरूजी का इंदौर आगमन होता, तब बहुत ही आनंद होता था । रोज सुबह–शाम उनके दर्शन के लिए जाते थे । एक लगन लगी होती थी कि घर का काम पूरा करके पहले गुरूजी के दर्शन को जाना, वहाँ थोड़ी देर उनके पास बैठना, कुछ काम हो तो करना–जैसे गुरूजी पत्र लिखवाते क्यूँकि जिसके भी पत्र गुरूजी

को आते, उनको सब को गुरूजी बराबर जवाब के रूप में आशीष देते, व अत्यंत अपनेपन से कुशल मंगल पूछते । बहुत अपनापन होता था उनके पत्रों में, मैं व्यक्त नहीं कर पा रही हूँ, वो तो अनुभव ही किया जा सकता है । उसके बाद मुझे स्कूल जाना हाता था । गुरूजी से कहती ''आती हूँ गुरूजी'' और प्रणाम करती, खूब आशीष देते, कहते ''हाँ, आती हूँ बोलना, जाती हूँ नहीं'' । स्कूल से लौटकर फिर पहले गुरूजी के पास जाते, उनके पास बैठते । इस समय बहुत से शिष्य वहाँ होते थे, गुरूजी खूब अच्छा बताते, उद्बोधन ही होता था ।

कैसे दिन बीत जाते पता ही नहीं चलता, फिर उनके इंदौर से प्रस्थान करने का दिन आता । हमारे मन बहुत भारी हो जाया करते थे । आँखे बार बार भर आती थी ''गुरूजी अब कब आएँगे?'' पूछते तो मुस्कुरा कर हमारा सांत्वन करते कहते, ''हम कहाँ जा रहे है, हम तो यही है'' । सच में उनकी उपस्थिति सदैव अनुभव होती है । हमारे साथ ही है । उनकी आवाज, उनके स्वर, उनकी सीख समय समय पर सदा मार्गदर्शन करती है ।

इंदौर में गुरूजी के अन्य शिष्य लोग उनको भोजन का निमंत्रण देते तब हम भी उनके साथ जाते । जब बाहर जाते, तो चलते समय गुरूजी का हाथ पकड़ कर मैं चलती–तब मन में इतना आनंद होता था कि मैं गुरूजी का हाथ पकड़ कर उनको सहारा देकर चल रही हूँ । कितनी मूर्ख थी, तब असल में गुरूजी मुझे हाथ पकड़ कर सहारा देकर चलते । उनका सहारा आज तक मिल रहा है । अब सोचती हूँ, कितनी आज्ञानी थी मैं ।

गुरूजी कहते, ''सबसे मिलजुल कर ऐसे ही रहो । पानी जैसे जिस रंग में मिल जाता है उसी जैसा हो जाता है'' ।

एक बार गुरूजी को एक गाना गाते हुए सुना, ‘‘मन रे, तु काहे ना धीर धरे...’’। मैं बैठकर सुनती रही । फिर प्रणाम किया, गुरूजी बोले ‘‘कौन है?’’, ‘‘ अलका है गुरूजी, कितना सुंदर गीत है’’ तब गुरूजी पूरा गाना गाए व प्रत्येक पंक्ति का अर्थ बताए–इस गीत में एक पंक्ति, ‘‘उतना ही उपकार समझ, जितना कोई संग निभा दे’’ ने मुझे बहुत प्रभावित किया । वैसे तो पूरा गाना ही बहुत अर्थपूर्ण है पर विशेषकर यह पंक्ति । इस पंक्ति को गुरूजी का आदेश है मानकर जीवन में हर प्रसंग में व्यवहार में लाया । यदि अपनी आशानुकूल कोई बात ना हो तो बुरा नहीं लगता, कोध नहीं आता, मन शांत हो जाता है । ‘‘भई आपने हमारे लिए इतना किया, वही आपका उपकार है’’ । गुरूजी के शब्द सुनाई देते है और सब मैल मन से हट जाती है ।

गुरूजी को सब काम पूर्ण रूप से पर्फेक्ट करना पसंद था । सिखाते की कैसे करना । एक बार उनके कुर्ते नए बन कर आए । कुर्ता आगे गले पर चुभ रहा था, बोले, ‘‘अलका आप इसे ठीक करके ला दो’’ । फिर उँगली से बताए की कुर्ते के गले को कितना काटकर बड़ा करना है, और जब ठीक करके ले आई तो खूब आशीष दिए । कैसे करना है ये तो गुरूजी ने ही बताया था–कितना काटो, कैसे सिलाई लगाओ, सब उन्होंने ही बताए । वही सब कार्य व्यवस्थित करवा लेते हैं । आज भी सब कुछ उन्हें ही बताती हूँ । उनसे बात करती हूँ, वो ही सब सूझबूझ देते है ।

23 फरवरी 1987 को राजीव (मेरे सबसे छोटे भाई) का विवाह था । वो प्रसंग आज भी जैसे के तैसे स्मरण है । इसके विषय में पहले भी पिताजी, जिन्हें गुरूजी ‘‘भाऊ’’ बुलाते, उन्होंने उद्‌बोधन में लिखा है । परम पूज्य गुरूजी विशेष रूप से विवाह में सम्मिलित होने श्री अशोक भैया व श्री उधो भैया के साथ इंदौर पधारे थे । पिताजी के यहाँ विवाह की गड़बड़ और अन्य रिश्तेदारों की गड़बड़ थी, अतः

गुरूजी को अशोक भैया व उधो भैया के साथ हमारे यहाँ लेकर आए ताकि उनकी सब व्यवस्था यथायोग्य हो । मेरा तो भाग ही खुल गया । अत्यंत प्रसन्न थी की अब गुरूजी की सेवा करने का पूर्ण अवसर मिला, लगा त्योहार ही है गुरूपरिवार के सदस्यों का गुरूजी से मिलना, उनका दर्शन करना । मुझे सबका आतिथ्य करने में खूब आनंद आ रहा था ।

परंतु विवाह के दिन सुबह सुबह शरद काका (मन्दसौरवाले) हमारे घर गुरूजी का चरणामृत लेने आए तब मालूम पड़ा कि पिताजी को दिल का दौरा पड़ा है । उन्हें लेने ऐम्ब्युलन्स घर के सामने खड़ी थी, और साथ ही एक बस भी जिससे सब मेहमान और राजीव विवहा स्थल को प्रस्थान करने वाले थे । गुरूजी बोले, सब कार्य यथा विधि सम्पन्न होने दो । विवाह विधि सब संजीव और नीना (मेरे मंझले भाई व भाभी) ने सम्पन्न किए ।

ऐम्ब्युलन्स में पिताजी के साथ राघव (मेरा भाई) ''ये'' (मेरे पति), और माँ जिन्हें गुरूजी ''ताई'' बुलाते थे, अस्पताल गए । आई.सी.य. में भर्ती किया गया । कुछ देर बाद हम गुरूजी के साथ अस्पताल गए । डॉक्टर साहब पिताजी को चेक कर के बाहर निकले ही थे, बोले, ''मैं अपनी ओर से सारे प्रयत्न कर चुका हूँ, इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता, अब 'उस' (भगवान) पर छोड़ दो'' । गुरूजी आई.सी.यू. म पिताजी के सिरहाने खड़े रहे, थोड़ी देर पिताजी की तरफ देखते रहे फिर आशीष दिए ।

मेरे पति ने पूज्य गुरूजी को यमराज से गुत्थम–गुथा होकर लड़ते हुए स्वयं अपनी आँखों से देखा । पिताजी धीरे धीरे ठीक होते गए । डॉक्टर साहब भी आश्यचर्य करें । गुरूजी को कृपा, उनकी महिमा, उनकी दया से पिताजी से अस्पताल से घर आ गए । गुरूजी के कृपा अपरम्पार है । पूरा घर, विवाह, सब

कुछ गुरूजी ही सम्हाले । घर में उदासी बिलकुल नहीं थी । जहां गुरूजी विराजमान हों, वहाँ आनंद, प्रसन्नता के सिवाय किसी उदासी को स्थान नहीं है । फिर सौ. अर्चना (हमारी नयी बहु) को गुरूजी ने अपने पास बुलाया और समझाया, क्यूँकि गुरूजी उसे गुमसुम और सहमी सहमी रहते देख लिए थे; गुरूजी बोले, ''देखो बहु, तुम नई दुल्हन हो, खुश रहो बेटी, किसी बात को बोझ अपने मन पर नहीं रखना । जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ, तब 23 फरवरी 1987 को तुम्हारा विवाह दिन निश्चित था । जब भाऊ का जन्म हुआ, तब 23 फरवरी को दिल का दौरा पड़कर अस्वस्थ होना निश्चित था । ये दोनों घटनाएँ पूर्व नियोजित है, आपस में इनका कोई सम्बन्ध नहीं । अब सब अच्छा होगा, चिन्ता नहीं करना, प्रसन्ना रहो'' । कितना सुंदर समझाए गुरूजी । उनकी कृपा सब पर सदैव बनी रहे यही प्रार्थना है ।

जब सब ठीक सामान्य हुआ, तब गुरूजी इंदौर से प्रस्थान किए और मुझे कहे की ''अलका, सब समाचार देते रहना भाऊ के स्वास्थ्य के बारे में'', और फिर नियमित मैं भी पत्र लिखती और तुरंत उनका आशीष पत्र स्वरूप प्राप्त हो जाता ।

गुरूजी ऐसे ही सदैव सम्हालते है । उनके सिवा कोई नहीं है । सर्वस्य हैं । मैं उन्हीं से बात करती हूँ, उन्हें ही बताती हूँ, सब सूझबूझ मिलती है, सब काम बन जाते हैं ।

ये सब गुरूजी ही लिखवाए हैं, सब उनके चरणों में अर्पण है । पुनः पुनः सतत निरंतर उनके पावन चरणों में सादर प्रणाम ।

श्रीमती अलका गीद, संजीव भटजीवाले और उनकी पत्नि श्रीमती नीना भटजीवाले

परम पूज्य गुरूजी के साथ आनंद लेते हुए ।

जय गुरूजी

आपकी अलका गीद

''त्रिकालदर्शी प. पू. गुरूजी''

मेरा कनिष्ठ पुत्र 5 मई 2016 को अमेरिका सपत्नीक रवाना हुआ । वह आईटी कंपनी में पुणे में कार्यरत् था । कंपनी ने ही उसे अमेरिका भेजा था । उस समय उसे अमेरिकन प्रशासन द्वारा 6 साल का वीसा प्राप्त हुआ था । हम सबकी यह सोच थी की वह 2022 में ही स्वदेश लौटेगा । उसे जिस प्रोजेक्ट के लिए भेजा था वह 2018 में खत्म हो गया । कंपनी की सभी ज्येष्ठो की सलाह थी की वह कुछ दिन वहीं रूककर दूसरे प्रोजेक्ट या दूसरे कंपनी में 2022 तक काम करे । उसने हमारी सलाह मांगी । प. पू. गुरूजी की प्रेरणानुसार हमने उसे बताया कि अभी प्रोजेक्ट खत्म हो गया है तो भारत वापस आ जाओ । दूसरा प्रोजेक्ट मिलने पर वापस अमेरिका जा सकते हो । वे दोनों 2018 जुलाई में वापस आ गए । 2–3 महीने में ही बहु गर्भवती रहने के कारण अमेरिका वापस जाना रहित हो गया ।

अभी न्यूजर्सी प्रांत में वह कार्यरत् था वहाँ कोरोना का प्रभाव अत्यधिक है । प्राप्त जानकारीनुसार अमेरिका प्रशासन सभी विदेशियों को उनके देश वापस जाने पर मजबूर कर रहा है । तथा वहां जन्मे उनके संतानों को अमेरिकन नागरिक होने के कारण वहीं रोककर शिशुपालन गृह में रखने की चेतावनी दे रहा है ।

अम अत्यत भाग्यवान है की हमारे बेटा और बहु स्वखुशी से, प. पू. गुरूजी की कृपा से भारत लौटे और उनके बेटे ने भारत में 13 जुलाई 2019 को आषाढ़ी एकादशी के दिन जन्म लिया । बड़े मुसीबत से प. पू. गुरूजी ने हमें बचाया । यह सब प. पू. गुरूजी के मार्गदर्शन, कृपा और आशीर्वाद से ही हुआ है ।

सौ. किशोरी– प्रदीप जलगांवकर, नागपुर

महाराष्ट्र

''कृपासिंध, गुरूजी''

हमारी बहु चि. सौ. मधूरा गत वर्ष गर्भवती थी! 5–9–19 प्रसूती की अनुमानीत तारीख थी । प्रसूती नागपुर में करना तय हुआ था । जून माह में वह पुणे से नागपुर आयी! वैद्यकीय जांच सामान्य होने के कारण वह 25 जून वर्धा मायके गयी! 15–20 दिन बाद वापसी आने का तय हुआ! हम लोग भी बंगलोर बडे बेटे के घर चल दिये । 12 जुलाई शाम सूचना प्राप्त हो गयी की गर्भ को मां द्वारा बहुत कम खून मिल रहा है इमरजन्सी शस्त्र किया करना आवश्यक था! वर्धा में बालचिकित्सा अपर्याप्त होने के कारण बहु को तुरंत नागपुर लाने का फैसला सबने मिलकर दिया! मैं और मेरे पत्नि ने पूज्य गूरूजी से प्रार्थना की वह दिवस आषाढ़ी एकादशी थी! माता भगवती से 5 एकादशी व्रत कबूल किया! बहु को हौसला बढ़ाकर नागपुर लाया गया! हम हवाई जहाज से तथा बेटा पुणे से नागपुर पहुंचे ! मेरे डॉक्टर मित्रों ने योग्य खबरदारी लेकर प्रसूती शस्त्र किया सम्पन्न की ! पोता मात्र 1 कि. वजन का था ! उसे ऑक्सीजन लगाकर शिशु अस्पताल शिफ्ट किया ! 13–7–19 को रात 12:43 पर उसका जन्म हुआ ! वह एकादशी के दिन–विट्ठल जैसे हमारे घर आये ! एक माह उसे अस्पताल रहना पड़ा ! अब वह गुरूजी के कृपा से तंदुरूस्त है !

हमने एकादशी व्रत पूर्ण श्रद्धा से पूर्ण किया ! यह संकट प. पू. गुरूजी के कारण ही टल गया! परम पूज्य गुरूजी को कोटि कोटि प्रणाम !

डॉ. प्रदीप जलगांवकर

नागपुर (महाराष्ट्र)

।। तारणहार गुरूजी ।।

मेरे पति श्री प्रकाश राजदेरकर 2011 में दूरदर्शन से सीनियर इंजीनियर पद से निवृत्त हो गए । उन्हें ब्लड प्रेशर और बाद में मधुमेह की शिकायत हुई। नियमित औषधोपचार चल रहा था।

दिनांक 22–02–2019 को शाम में वह पार्किंग की जगह पर टहल रहे थे । एकाएक उन्हें छाती में दर्द हुआ तथा अस्वस्थ हो गए । उन्हें हम गुरूबंधु डॉ. जलगांवकर जी के घर रात्रि 10 बजे ले गए । उन्होंने आपातकालीन दवाई दी तथा दूसरे दिन सबेरे स्पंदन हार्ट सेंटर धंतोली ले जाने का परामर्श दिया । रात ठीक तरह से गुजर गई ।

दूसरे दिन हम स्पंदन हार्ट सेंटर गए । डॉ. मार्डीकरजी ने जांच की । इ.सी.जी. में हार्ट अटक का निदान हुआ । इकोटेस्ट हार्ट का पंपिंग केवल 15 प्रतिशत था । उन्हें तुरंत भर्ती किया । 7 दिन बाद हालात सुधरने के बाद एनजिओग्राफी हो गई । उसमें चार जगह ब्लॉक मिल गए । उन्हें आई.सी.यू. में रखा गया । 14 मार्च को हार्ट का पंपिंग 15 प्रतिशत से बढ़कर 25 प्रतिशत हो गया था । डॉ. मार्डीकरजी ने हाईरिस्क समझकर एनजिओप्लास्टी व स्टेटिंग दो जगह पर किया । एक दम चार जगह एनजिओप्लास्टी करना खतरनाक हो सकता था । उसी दिन प.पू. गुरूजी का पुण्य तिथि कार्यक्रम शिवपुर आश्रम में चल रहा था । दो दिन फिर आई.सी.यू. में रख । हमने प्रिय भास्कर भैया, राजू काण्णव तथा मोहन देशपांडे को ऑपरेशन सही होने का समाचार दिया । वे उस समय शिवपुर में ही थे ।

8 दिन बाद 23–03–2019 को उन्हें डिस्चार्ज मिल गया । गत एक साल में उनकी तबियत सुधरती जा रही है । प. पू. गुरूजी के आशीर्वाद स उनकी

एनजिओप्लास्टी तथा स्टेटिंग सही रही । 23 जुलाई के कार्यक्रम में भी सम्मिलित न होने का निर्णय डॉक्टर्स के परामर्श बाद लिया । तबीयत अच्छी होने के बाद हम सहपरिवार दिसंबर 19 तथा 14 मार्च 20 को शिवपुर दर्शन के लिये जाकर आए ।

प.पू. गुरूजी की असीम कृपा स उनकी तबियत काफी सुधर गई है ।

सौ. माधुरी प्रकाश राजदेरकर
नागपुर (महाराष्ट्र)

।। सत्गुरू कृपा ।।

मेरे पिताजी सन् 1988 से 1991 तक इटारसी दूरदर्शन में कार्यरत् थे । उनका तबादला नागपुर हो चुका था । उस वक्त हम नागपुर में रहते थे । परंतु वरिष्ठ अधिकारी उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे । उनका कहना था कि आपके जगह पर जब तक कोई नहीं आता तब तक वह छोडने के लिए राजी नहीं थे । यह बात पिताजी ने दिल्ली के मुख्य कार्यालय को बताई और उस पर कार्यवाही करके उनकी जगह दूसरे अधिकारी की नियुक्ति की गई । इस चार बार हुआ । हर बार ऑर्डर आते गये, परंतु वरिष्ठ अधिकारी ने हर वक्त अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए ऑडर कैंसल करते गए ।

आखिर वक्त आ गया श्री प. पू. गुरूजी नागपुर से भोपाल जा रहे थे । उन्हें याद आया कि पिताजी इटारसी में कार्यरत् हैं । परंतु कार्यालय का नाम तथा पता मालूम नहीं था । उनके साथ श्री जैन चाचा तथा दीवान चाचा थे । ढूंढ़ते ढूंढ़ते ऑफिस पहुंच गए । उन्होंने पिताजी को प्रसाद देकर ढ़ेर सारे आशीर्वाद दिये और आप 15 दिन में नागपुर आओगे और बराबर 15 वें दिन पिताजी नागपुर के

कार्यालय में ज्वाईन हो गए । यह अनुभव हम कभी भूल नहीं सकते । श्री प. पू. गुरूजी की असीम कृपा हमारे परिवार पर है ।

वेदश्री राजदेरकर
नागपुर (महाराष्ट्र)

।। हमारे सत्गुरू जी –सर्वव्यापी ।।

समस्त प्राणी वस्तु में गुरूजी ही गुरूजी दिखते थे गुरूजी द्वारा मेरा नामकरण बदलकर यथानमः तथा गुणः कर दिए । गुरूजी आशीर्वाद देते हमेशा हमारे पास रहते है उनकी याद हमेशा बनी रहती है । गुरूजी साक्षात परमप्रकाश में विद्यमान है गुरूजी का सशरीर दर्शन गुरूजी के नेत्रों में अगनी ज्वाला प्रत्यक्ष देखा जहाँ देखता हूँ, वहां गुरूजी ही है । सूर्य चन्द्र जल में गुरूजी को देखा रामचरितमानस पाठकर रहा था । इलाहाबाद कालपुर में गुरूजी समाहित हो गए । नेत्र बंद देखा गुरूजी श्रद्धा विश्वास के मूर्ति गुरूजी ही सब है । सत्र 2019–20 जनवरी 5 को 5 बजे ध्यान स्थिति में मुंगेली आश्रम पहुॅचा । प्रणाम कर देखता हूँ जहाँ गुरूजी का निवास आसन है, वह कमरा पूरा प्रकाश से भरा है, जिसमें गुरूजी है । हमारे साथ बहुत गुरू भाई हैं, बहिन हैं सबका नाम नहीं पर चेहरे हैं, श्री अशोक बाबा है, चन्दा दीदी है , गुरूप्रसाद दर्ज श्री प्रकाश मिश्र ओ.पी. शर्माजी, प्राची दीदी इत्यादि थे । गुरूजी का आशीर्वाद आज भी मिल रहा है । अमोघ है आत्मविद भव आनंद हो समस्त मनोकामना पूर्ण हो हमारा पुत्र ऋषी त्रिपाठी की रक्षा साक्षात गुरूजी द्वारा हुई । गीतांजली एक्सप्रेस से गिर गया पर कोई चोट नहीं गुरूजी ही सब कुछ है । क्या लिखू? गुरूजी हमारे निवास स्थान पसान में भी आते हैं प्रत्यक्ष रहते हैं

अन्य रूपों में, ओम जय जय जय गुरूजी शरणम् ।

'सत्गुरूशरणम्'

आनंद है आनंद है आनंद है
रजनीकांत तिपाठी
ग्राम पो. पसान (दर्रीपारा) जिला कोरबा छ. ग.

।। ऊँ श्री गुरूजी ।।

23 मार्च 2020 / सोमवार / सुबह 9:00 बजे से 10:00

रोज की तरह आज हम पूरा परिवार अभ्यास में बैठे थे । प. पू. श्री श्री गुरूजी की मानस पूजा पूरी होने के पश्चात मुझे ऐसे दिखा की बहुत दूर से काले, हरे, पीले रंग की गंदगी वाले नदी का प्रवाह हमारी तरफ जोर से आ रहा था । जैसे ही वह प्रवाह हमारे पास आने लगा वैसे ही प. पू. श्री गुरूजी ने हमारे और गुरूजी के शरीर से एक सुवर्ण प्रकाश का प्रवाह निकला । प. पू. श्री गुरूजी ने उसे नदी की तरफ भेज दिया । उस सुनहरे प्रकाश की गति गंदगी वाले नदी के प्रवाह से हजार गुना ज्यादा था । प. पू. श्री गुरूजी के उस सुनहरे प्रकाश ने इतने जोर से वो गंदगी फेकी कि वो सात समंदर के बाहर फेक दी । और उसके तुरंत बाद भारत का नक्शा दिखाई दिया और वह पूरी तरह सुनहरा प्रकाश से प्रकाशवान(Golden) हो गया । ये अनुभव होने के बाद उस साधक को पाँच–सात दिन बहुत ज्यादा Weakness हुआ था । ।। जय गुरूजी ।।

'सत्गुरूशरणम्'

आनंद है आनंद है आनंद है

।। जय गुरूजी ।।

चि. मुकुंद मनोज कुथे ये मेरा लड़का है । इसके गीत रामायण ग्रुप का कार्यक्रम सज्जनगढ पर दासनौवमी, स्वामी दामदास जी के पुण्य तिथि के पर्व पर रखा गया था । गीत रामायण ग्रुप में सभी छोटे बच्चे थे । श्री गजानन रानडे स्वयं बच्चों के संगीत कार्यक्रम का आयोजन, तथा नियोजन करते है । उन्होंने 11 फरवरी 2020 को बच्चा कंपनी का गीत रामायण कार्यक्रम का नियोजन सज्जनगढ़ पर किया था । सज्जनगढ़ महाराष्ट्र में सातारा के पास है । इस गढ़ पर पू. रामदास स्वामी जी की समाधि है । बड़ा ही पवित्र और रमणीय स्थान है । हर साल यहाँ पर दासनौवमी, का उत्सव धूम धाम से मनाया जाता है । ये सभी बच्चे 9 फरवरी को नागपुर से निकले 10 फरवरी को वहाँ पहुँचे । 11 फरवरी को प्रातः ठीक 4:00 बजे स्वामी रामदास जी के पादुका पर अभिषेक किया जाता है । इनके संगीत नियोजक श्री रानडे और मुकुंद ये दोनों ही ठीक 4:00 बजे उठकर स्नान करके समाधि स्थल पर पहुँचे । बड़ा ही सुंदर विलोभनीय दृश्य था चहु ओर चंदन तथा अष्टगंध की सुगंध फैल रही थी । बड़ा ही आनंदमयी वातावरण था। बाकि सभी बच्चे तथा उनके पालक निद्रा देवी के गोद में आनंद से सोये थे । केवल ये दोनों ही वहाँ उपस्थित थे । समाधि पर रामदास स्वामी जी की पादुका पर अभिषेक आरंभ हुआ लेकिन मुकुंद को ऐसा लग रहा था कि मानो ये अभिषेक गुरूजी की पादुका पर हो रहा है । कुछ समय तक वो इसी ट्रांस में था । 10 मिनिट के बाद उसे महसूस हुआ कि अरे मैं तो सज्जनगढ़ पर हूँ और यह अभिषेक रामदास स्वामी जी के पादुका पर हो रहा है । लेकिन उसको लगातार गुरूजी की पादुका पर हो रहे अभिषेक की याद आ रही थी ।

17 फरवरी शाम को समाधि के पास गीत रामायण का कार्यक्रम बहुत सुंदरता से संपन्न हुआ । वहाँ उपस्थित श्रोता में ज्याद ज्येष्ठ नागरिक थे । उन्होंने बच्चों के कार्यक्रम की बहुत सराहना की, और उनमें स एक ज्येष्ठ सज्जन ने मुकुंद से कहा कि 'आपका गाना बहुत अच्छा था'। 12 जनवरी को सभी लोग वापसी की यात्रा के लिये 9:30 बजे सज्जनगढ़ से रवाना होने वाले थे । सज्जनगढ़ पर वेदशाला है यहाँ के एक छात्र– प्रदयुम्न दादा ने उसको समाधि का तीर्थ बोतल में लाकर दिया और बाला गाने के कार्यक्रम के पहले इसको थोड़ा सा ले लिया करना, आपकी आवाज मीठी हो जाएगी और गाना भी बहुत अच्छा होगा । मुकुंद और प्रदयुम्न ने नाश्ता किया और दोनों बाते करते–करते कल्याण स्वामी का स्मारक देखने चले गये ।

बातों–बातों में वे दोनों थोड़ा सा आगे निकल गये । एकाएक मुकुंद को याद आया कि आज ही सुबह 9:30 बजे उनको यहाँ से प्रस्थान करना है और बातों–बातों में बहुत समय हो गया । इसलिए प्रदयुम्न नाम का लड़का अपने वेदशाला की ओर चला गया और मुकुंद कल्याण स्वामी का स्मारक देखने चल पड़ा । वहा से वापिस आते समय रास्ते में एक देवी का मंदिर है जिस मूर्ति की स्थापना स्वयं रामदास स्वामी जी ने की है । वो भी एक सुंदर कहानी है उस देवी के मंदिर के ओटे पर एक रामदासी बैठे थे । जैसे ही मुकुंद अपने कमरे की ओर जाने लगा तो उन्होंने उसको आवाज दी और स्वयं काठी के सहारे उसके पास गये और बोले कल का अपका गाना सुनकर मैं अति प्रसन्न हूँ । मुकुंद ने उनको विनम्रता से प्रणाम किया । उन्होंने–शास्त्रीय संगीत में आगे बढ़ो मेरी आशिष है । जैसा मुकुंद उनके तरफ देखा तो इसको महसूस हुआ कि वो रामदास जी की ऊँचाई लगभग सात फुट के ऊपर है । ये थोड़ा सा डर गया था । उन्होंने कहा कि मुझे पहचाना नहीं क्या ?

इसने नहीं करके गर्दन हिलाई और वह रामदासी मंदिर के ओर अपने लम्बी टांगों से बढ़ने लगे, जाते–जाते कहने लगे जावो राजू को मैंने याद किया राजू को बतला देना और वह देवी के मंदिर में प्रवेश कर गये और अदृश्य हो गये । जब मैंने ये सारी बाते मेरी भाई को बताई तो वो बोला कि स्वयं पू. गुरूजी ही थे । वो रामदासी के रूप में आकर उन्होंन मुकुंद को दर्शन तथा आशिष प्रदान किया ।

14 मार्च महानिर्वाण कार्यक्रम हेतु हम लोग बाई रोड 13 मार्च को ही मुंगेली के लिये निकले । मुकुंद की परीक्षा, मार्च के दूसरे सप्ताह में होने के कारण उसका आने का कोई निश्चित नहीं हो पा रहा था । लेकिन उसके मौसी का जाना निरस्त होने के कारण मुकुंद जिद करने लगा कि मैं भी साथ आता हूँ । हम लोग शाम को 6:00 बजे मुंगेली पहुँचे । ठीक 4:00 बजे चन्दा दीदी ने सभी को जगाकर चाय पिलाई, स्नान किया ,हम सभी गुरू भाई 5:00 बजे समाधि स्थल के पास उपस्थित हुए । सभी ने मिलकर फूलों से समाधि सजाई थी । ब्रम्हमुहूर्त था । बड़ा प्रसन्न वातावरण था । इसी प्रसन्न वातावरण में मंत्रों के साथ परम पू. गुरूजी के चरणों का अभिषेक संपन्न हुआ । सभी ने आरती तथा भजन और नाम संकीर्तन किया । उसमें मुकुंद ने भी भजन की सेवा प्रदान की थी । शाम 4:00 बजे हम सभी गुरू भाई समाधि के पास बैठकर गुरूजी के पोथी का पठन किया तथा संस्मरण सुनाये । इसमें 2 से 2:30 घंटे लग गये । सभी गुरू भाई परम आनंदवश मौन होकर समाधि के पास बैठे थे । कुछ लोग बाहर टहल रहे थे । **मुकुंद भी बाहर टहलते–टहलते पुरानी मूर्ति ध्यान कक्ष में रखी है उस कक्ष के भीतर गया तो वहां उसने देखा कि वहां मूर्ति नहीं है । बल्कि साक्षात गुरूजी पलंग पर दाहिने करवट की अवस्था में लेटे हुए हैं और उनके चारों ओर दिव्य प्रकाश फैला हुआ है और गुरूजी कुछ–कुछ रामकृष्ण परमहंस जी जैसे**

दिख रहे थे। गुरूजी ने उसको सामने बैठने के लिए कहा और उसको डाटने लगे कि आपने जो भजन समाधि के पास गाया उस समय आपके गले से आवाज बराबर नहीं आ रही है इसलिए केवल एक ही भजन गाया । आपने ऐसा कैसा सोचा कि आप गा नहीं सकते । गाते समय तुम्हारी आवाज तुम्हारी नहीं रहती मेरी होती है । उस पर गुरूजी ने एक प्रसंग सुनाया कि

अर्जुन से किसी ने पूँछा– कि अर्जुन आप युद्ध में मारे गये तो क्या होगा ?

उस पर अर्जुन उत्तर दिया । कि मैं मरूँगा ही नहीं क्योंकि मेरे पास श्री भगवान कृष्ण है ।

फिर अर्जुन से किसी ने पूँछा– कि भगवान आपके पास है लेकिन आपको कैसे बचाएँगे ?

इस पर भगवान ने इसका उत्तर दिया कि अर्जुन मैं आपके दाये नहीं, बाये नहीं, आपके भीतर हूँ इसलिए आपको कोई मार नहीं सकता है । इस प्रकार डांटा और समझाया भी । लेकिन मुकुंद थोड़ा डर सा गया और मां के पास जाकर उसने सारी बाते बताई हम लोग वहां उपस्थित थे इस प्रसंग के सभी साझेदार थे ।

2 अपल को मुकुंद का जन्म दिन था उस रात में उसने सपने में वही सज्जनगण वाले रामदासी, जो मुंगेली के ध्यान कक्ष में भी साक्षात दिखे थे वही दिखे । और उसने देखा कि वो बड़ा यज्ञ कर रहे है । तथा महादेव जी के पिंडी पर अभिषेक भी कर रहे है । मैंने उसको पूँछा कि यह रामदासी आजोबा है कौन ? गुरूजी है, कि और कोई है । तु ऐसा कर कि आने वाले एकादशी को संकल्प करके एकादशी का व्रत कर । उसने एकादशी को संकल्प किया कि आप दर्शन देकर प्रमाणित हो

जायेगा कि आप है कौन ? इसका जवाब मुझे चाहिए । एकादशी के दूसरे दिन ठीक 3 बजे इसको कुछ ठीक नहीं लग रहा था इसलिए ये उठा और ये देखता है कि मैं पलंग पर सोया हुआ हूँ । नीचे कोई भी नहीं है, पर जीप का हॉर्न कौन बजा रहा है इसलिए नीचे गया तो देखा कि जीप में वही रामदासी आजोबा धोती पहने हुए बैठे है । ऊपर केवल जनेऊ पहने है । उन्होंने जीप में बैठने के लिए कहा और बोले आज मैं आपके सभी प्रश्नों के उत्तर देने वाला हूँ । तेरा और मेरा क्या संबंध है । ये सारी बाते बताने वाला हूँ । मैं इस जन्म का वासुदेव रामेश्वर तिवारी हूँ । तेरा और मेरा बहुत जन्म से अच्छा संबंध है उस समय कुछ बातें बताने को रह गई है । इसलिए मैं आपको ही दिखता हूँ और मैं सब बाते बताने वाला हूँ जीप जंगल से गुजरते मुंगेली के शीवपुर आश्रम के सामने रूक गई । दोनों भीतर गये । दामदास जी आजोबा (गुरूजी) ने खड़ाऊँ पहने थे । गुरूजी ने स्वयं अपनी खड़ाऊँ उतारी और मुझे भी चप्पल उतारने को कहा और पुराने भवन के एक छोटे कमरे में भीतर ले जाकर कहा कि ये मेरा घर है । पूरा शिवपुर आश्रम उसको घुमाया बहुत सारी रहस्यमय बाते बतायी और कुछ सुझाव भी उसको बताए ।

अब वापसी का प्रवास शुरू हुआ इस प्रवास में भी उन्होंने अति महत्वपूर्ण बाते बतायी कि गुरूजी ने किस किस को मृत्यु से बचाया । किसको आयु प्रदान की, नाम भी बताये लेकिन इसका जिक्र किसी से मत करना। उस रहस्य को रहस्य ही रहने दो करके बताया और बोले मैंने किसी को भी मेरे गद्दी पे बिठाया नहीं है । फिर इधर– उधर की बाते करने लगे और कोरोना के विषय में बताने लगे कि इन बड़े राष्ट्रों की ये दुर्गत क्यों हुई ? और एक अति सुंदर अर्थपूर्ण श्लोक बताया इतने में मुकुन्द का घर आ गया । इसको जीप में से उतारा और मुकुन्द घर में

प्रवेश कर पलंग पर सो गया । सुबह 6:30–9:00 बजे जागने के बाद उसने यह सारी बातें मुझे बतायी और वा श्लोक के कुछ शब्द बताए, हम लोगों ने गूगल पर सर्च किया लेकिन श्लोक नहीं मिला । दूसरे दिन फिर प्रातः आकर वह श्लोक फिर से पूरा बताया और उसका अर्थ भी बताया ।

श्लोकः– **यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता ।**

एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ।।

अर्थः= यौवन, धन, संपत्ति, प्रभुत्व और अविवेक इन चारों में से यदि एक भी हो तो अनर्थ का कारण होता है पर जहाँ ये चारों साथ हो तो फिर कहना ही क्या ।

उसी प्रकार मुकुंद के लिए भी एक श्लोक बताया और बोले ये भगवत गीता का श्लोक है । वो सभी श्लोक तथा अर्थ गूगल पर सर्च करने के बाद गुरूजी ने जैसे बताये वैसे ही मिले । मुकुंद ने जब दोपहर या सुबह गाने कि रियाज करने के लिए बैठता था तो उसके कान में आवाज आती थी कि मैं वासुदेव बोल रहा हूँ और उसको चारों वेद के मंत्र बताये तथा कुछ पुराणों के भी जैसे अग्नि पुराण, विष्णु पुराण मंत्र बताये । रियाज समाप्त होने पर उसमें से कुछ मंत्र उसको याद रहते थे और वो उसे लिख लेता था इसके पश्चात हम लोग उसको गूगल पर या वेदों के जानकार लोगों से पूँछा तो उन्होंने बताया – ये मंत्र सही है और उसकी फोटोकापी एक प्रति भी लाकर दी । हमें दृढ़ विश्वास हो गया कि गुरूजी इसे सच–सच दिखा रहें है और सुना भी रहें है । यहाँ तक कि उसको समाधि स्थल ले जाते थे ॲस्ट्रल ट्रेव्हलिंग द्वारा वहां तानपुरा पर गुरूजी ने वेदों के मंत्र गाकर सुनाये । ये सारे मंत्र यज्ञ के है जिससे समाज और राष्ट्र का भला हो सके । इसलिए ऐसा लगता है कि भारत में कोरोना आया लेकिन मृत्यु की संख्या अन्य

राष्ट्रों की तुलना से बहुत कम है । इस पर गुरूजी ने कहा कि इससे बचना है तो कुलदेवता की उपासना करो और गुरूजी द्वारा दिया हुआ मंत्र का जाप करो । आपकी रक्षा गुरूजी अवश्य ही करेंगे । गुरूजी मुकुंद को 4–5 दिन, मुंगेली में समाधि के पास लेकर जाते थे और गुरूजी ने चारों वेद तथा अठारह पुराणों को उसे सुनाया । ऐसे करूणामयी हमारे परम पूज्य गुरूजी इस कोरोना – संकट से प्रत्येक मनुष्य की रक्षा के लिए, निरंतर सूक्ष्म जगत में कार्य कर रहे हैं । परम पू. गुरूजी के चरणों में शत शत नमन करती हूँ ।

मुकुंद की माँ मनीषा काण्णव–कुथे (श्री राजू काण्णव की छोटी बहिन)

।। ऊँ श्री गुरूजी ।।

एक गुरुभाई, प्लेन पकड़ने में गलत सोचकर, मानकर काफी विलम्ब से प्लेन पकड़ने निकले, गुरुजी का भरोसा था। जो प्लेन कभी विलम्ब नहीं होती , वह गुरुभाई परिवार को गंतव्य हेतु लेकर 15 मिनट विलम्ब से उड़ी । ऐसे हमारे गुरुजी हम सबके साथ , सब काम करते हरदम बने रहते है। गुरुजी सदा ही श्री चरणों में दण्डवत प्रणाम उनकी कृपा से हम सबका होता रहे।

जय गुरुजी, जय हो।
आपका **कृपापात्र**

।। ऊँ श्री गुरूजी ।।

बिलासपुर की एक गुरु बहन जो कि पिछले कुछ सालों से पी ,एच्,डी नहीं कर पा रही थी। वह एक दिन पूजास्थल में पादुका/चित्र में गुरुजी के श्रीचरणों में सिर रखकर खूब रोई ,जैसे हो भाव यही था कि पी ,एच्, डी नही हो पा रहा है , गुरुजी कृपा करें।

दूसरे दिन वह कमरा सफेद रोशनी से भर गया , उसको गुरुजी एक कागज दिखाए, जो सर्टिफिकेट था फिर बोले इसी के लिए रो रही थी न ,यह ले,कहकर वो सर्टिफिकेट दे दिए,जो आगे मिलने वाला पी,एच्, डी का रिजल्ट था।फिर पिछले वर्ष वो गुरुबहन पी ,एच्,डी की उपाधि से विभूषित हुई ,उन्हें जो सर्टिफिकेट मिला वो हूबहू वही था जो गुरुजी पहले से उनको दे दिए थे। उसको रात को लगभग 10-11 बजे खुली आँखों से यह सब गुरुजी दिखाए थे ,उनका कहना है मैं जाग्रत अवस्था में यह सब देखी हूँ और गुरुजी मुझे वह रिजल्ट दे दिए जो बाद में मुझे मिला ,बिल्कुल वह वही था।

जयगुरुजी।

आपकी **कृपापात्र**

।। ऊँ श्री गुरूजी ।।

एक गुरुभाई को कुछ वर्ष पहले सुबह सुबह एक शव दिखा , जो खून से सना था उसके माथे में बड़ी चोट थी। खून वही से बह रहा था और गुरुभाई उस शव में प्रवेश कर उत्तर की ओर जाने लगे।

शायद दोपहर शाम को एक तिराहे में गुरुजी की आवाज आई ,रोको रोको, वो मार देगा। हीरो होंडा को रोकने की कोशिश के पहले ही , बड़ी तेजी से आ रही कार उन्हें ठोकर मारकर गिराकर , जाने लगी , वो गाड़ी का नम्बर लिखने का प्रयास करना चाहे, अंदर से गुरुजी की आवाज आई,रहने दो, जाने दो, यह तो होना ही था। गुरुभाई को एक दो जगह शरीर मे खरोंच आई जो उसके कर्मों का प्रबल प्रारब्ध था। इतनी भयंकर ठोकर से गाड़ी का हैंडल एकदम पलट गया था , कुछ चोटे भी थी। पास ही में कोई मेकैनेक मिले गाड़ी को वो ठीक भी कर दिए और गुरुभाई उसमें बैठकर चलाते हुए स्वयं घर पहुंच गये।

किन्तु गुरुजी रूपी दिव्यात्मा , परमात्मा के शरण से ,उनके वरण के प्रभाव से , उनकी विशेष कृपा से , अत्यंत मामूली चोट मिलकर , हंसी खेल की तरह , गुरुभाई सारे प्रारब्ध से जैसे मुक्त हो गए।

जय गुरुजी, जय हो।

आपका **कृपापात्र**

श्री विष्णुकांत तिवारी एडवोकेट, शहडोल म.प्र.

।। ऊँ श्री गुरुजी ।।

सद्गुरु की कृपा शिष्यों के ऊपर ऐसी होती है कि वह जहां कहीं भी हो , अपने पास खींच लेते हैं। यह बात बाद में समझ में आती है l ऐसा ही कुछ सद्गुरु की कृपा से मेरे साथ हुआ। पढ़ाई करने के बाद जब रायपुर में मेरी नौकरी लगी तो फिर वहां से मैं निकल नहीं पाया। क्योंकि दूसरी नौकरी जो मुझे ग्वालियर में ही ज्वाइन करनी थी और घर में रहने के लिए मैं लालायित था किंतु उस समय मेरे पास पैसों की व्यवस्था न होने के कारण मैं इस्तीफा नहीं दे सका । 2 साल बाद में मेरी नौकरी मैंने लोरमी में ज्वाइन की l जो मुंगेली से मात्र 30 किलोमीटर ही है। तब तक भी मुझे पता नहीं था कि सद्गुरु की कृपा मेरे ऊपर बरसने वाली है ।लोरमी में रहने वाले गुरु परिवार के वरिष्ठ सदस्य बड़कु भैया माननीय ओपी शर्मा जी के संपर्क में में कैसे आया, यह भी मुझे ठीक से याद नहीं है। लेकिन एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें कहीं ले चलूंगा आपकी आध्यात्मिक अभिरुचि है किसी से मिलवाऊंगा l वह दिसंबर माह का उत्तरार्ध था , मैं अपने विवाह से लौट आया था और
एक दिन मुझे शर्मा भैया ने बुलाया और अपने साथ मुंगेली लेकर आए। हमने गुरु जी को प्रणाम किया और बड़े बाजार स्थित आश्रम में , गुरु जी के कक्ष में सामने की ओर बैठ गए। तब भैया ने कहा- गुरुजी से कि यह आप की शरण में आए हैं । जैसा कि स्वाभाविक होता है मैंने पढ़ रखा था कि गुरु भी सोच समझ कर बनाना चाहिए तो मेरे मन में विचार आया कि ऐसा कैसे? मेरे मनोभावों को ताड़ते हुए बड़कऊ

भैया ने मुझे इशारा किया कि आप शांत रहिए ।अंतर्यामी सतगुरु जी ने अहंकार को पढ़ लिया और कहा कि शरण में तो आ गए हैं शरण ले लिया है किंतु दीक्षा फिर कभी दूंगा । और उन्होंने एक मंत्र मुझे दिया आशीष देकर विधि बताई कि इसको ऐसे जाप करना है समय तो ठीक से याद नहीं। वह दिन था 31 दिसंबर उन्नीस सौ 85 | बस उसके बाद जो लो लगी वह बताने बैठा तो फिर कहानी बहुत बड़ी हो जाएगी। फिर मैं गुरुजी के पीछे घूमता रहा कि मुझे दीक्षा मिले किंतु हर बार गुरु जी कहते   - बाद में '।

यह कहते कहते छः महीने गुजर गए । रीवा में गुरु पूजन का कार्यक्रम था । वहां से लौटकर वापस लोरमी आ गए। इस बीच मेरी धर्मपत्नी भी आ चुकी थी । दिन में उन्हें लेकर मुंगेली गुरु जी के दर्शन के लिए गया उस दिन गुरुजी बोले - आओ बैठो तो मैं दीक्षा देनी है, सामग्री लाए हो, मैंने कहा- नहीं, गुरु जी, मैं तो कुछ नहीं लाया । गुरुजी ने बोला क्यों रे युद्ध को जा रहे हो, हथियार कुछ नहीं, फिर बोले जाओ थोड़े से फल ले आओ। गया फूल फल ले आया और उस दिन गुरूजी ने विधिवत दीक्षा प्रदान की। उसके बाद से आज तक सद्गुरु जी का सानिध्य प्राप्त है , उनकी कृपा के जीवन में ढेरों अनुभव हैं जहां कहीं भी कोई समस्या आती है, जैसे गुरु जी कहते थे, वही दिखाई देता है कि कोई भी आता है और समस्या को दूर कर के चला जाता है गुरु जी की कृपा का वर्णन भी कठिन है। वे कहते थे - गुरुजी नहीं, चाकर मिला है तुमको, जहां आवाज दोगे, जहां जरूरत होगी, वहीं उपस्थित हो जाऊंगा और यह हम अपने प्रतिदिन छोटे से छोटे कामों में भी देखते हैं, हमारे लिए तो हर जगह, हमारे रक्षक हैं , हमारे मार्गदर्शक हैं, यह भी एक संयोग ही था । गुरु जी के

जाने के बाद लगभग 6 महीने बाद मेरा स्थानांतरण ग्वालियर हो गया। इस तरह मुझे लगता है कि गुरु जी अपनी कृपा के लिए मुझे चुना और जब उन्होंने शारीरिक देह से विदा ली । गुरु जी वहां से मुझे भी मुक्त कर दिया।

आपका **कृपापा**त्र

जगदीश गुप्ता, ग्वालियर

Second cover page